राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद् (NCERT)
द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रम
पर आधारित

Eliana Books

एकलव्य

हिंदी पाठमाला

Help-Kit

6-8

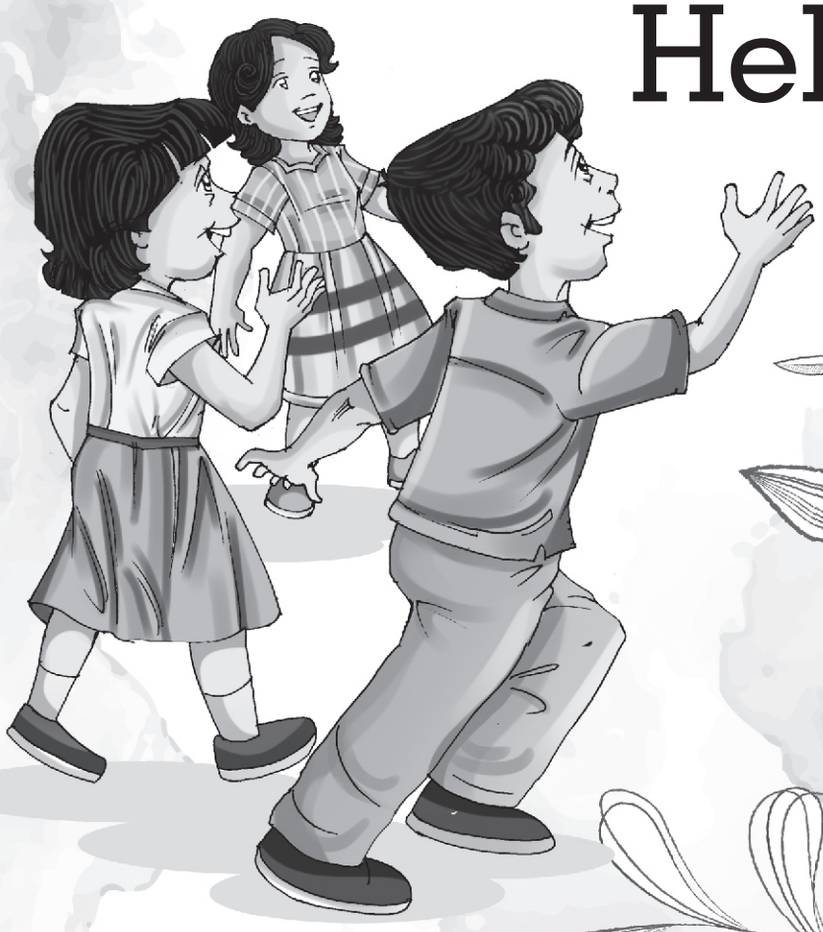

BOOK-6

पाठ-1 इतने ऊँचे उठो

खण्ड-अ

1. (क) कवि सभी भेदभावों से ऊपर उठकर विश्व में समानता चाहते हैं।
(ख) कवि कहते हैं कि हमें नए समाज निर्माण में अपनी नई सोच को जाति, धर्म, रंग-द्वेष आदि जैसे भेदभावों से ऊपर उठकर सभी को समानता की दृष्टि से देखना चाहिए।
(ग) जिस तरह परिवर्तन सदैव होता रहता है उसी प्रकार हमें भी सभी बंधनों को तोड़कर हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए।
(घ) वास्तविक
(ङ) समाज का सृजन करने को कह रहा है।

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) i, (घ) iii

3. (क) इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से।
सिंचित करो धरा समता की भाववृष्टि से।
जाति भेद की, धर्म वेश की।
(ख) तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन।
गति, जीवन का सत्य चिरंतन।
धारा के शाश्वत प्रवाह में।
इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।

4.

जाति भेद की	नूतन अक्षर दो
नई तूलिका से	रुके न चिंतन
भाषा को	उसे धरती पर लाना
तोड़ों बंधन	धर्म वेश की
अगर कहीं हो स्वर्ग	चित्रों के रंग उभारो

5. (क) जिस प्रकार संगीतकार अपने नए राग में स्वरों को पिरोता है, उसी प्रकार हमें भी अपने समाज को नया रूप देने के लिए सृजनात्मक बनना होगा और सृजन को हमें अपने अंदर मौलिक रूप से ग्रहण करना होगा।
(ख) हमें अपनी सोच और भावनाएँ सदैव अच्छी रखनी चाहिए जिससे एक सुंदर समाज की रचना होगी और वह समाज सदैव विकास की ओर बढ़ता रहेगा। जिस प्रकार हम किसी आकर्षण की ओर खिंचे चले जाते हैं उसी प्रकार अच्छी सोच के साथ हमें खुद को भी आकर्षक बनाना है।

6. (क) कवि समाज में शीतलता और शांति लाने का प्रयत्न करना चाहता है। समाज को नया रूप देना चाहता है।
(ख) क्योंकि पुरानी परंपराओं से हमारा विकास अवरुद्ध होगा। जिस तरह परिवर्तन होता रहता है उसी प्रकार हमें भी आगे बढ़ते रहना चाहिए।
(ग) हमें अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप देते हुए अच्छाइयों को लेकर आगे बढ़ना चाहिए और हम समाज को सभी बुराइयों से ऊपर उठाकर एक खूबसूरत समाज की रचना कर सकते हैं।

7. वेश-द्वेष, स्वर-अक्षर, पोषक-द्रयोत्क, चिंतन-चिरंतन, तारे-हमारे

8. (क) पंकज, राजीव, नीरज; (ख) हवा, वायु, अनिल; (ग) अंबर, आकाश, आसमान; (घ) सूर्य, दिवाकर, रवि

9. नीचा, आकाश, गोरा, ऊष्ण, पुरातन, सुंदर, वर्तमान, जोड़ना, नरक

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 स्नोह्वाइट और सात बौने

खण्ड-अ

1. (क) स्नोह्वाइट एक राजा की पुत्री थी।
(ख) स्नोह्वाइट जंगल में एक छोटे-से मकान के अंदर बौनों के साथ रहती थी।
(ग) उसके कमरे में एक जादुई शीशा था।
(घ) उसकी त्वचा बर्फ के समान सफेद थी।
(ङ) उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली।

2. (क) i, (ख) iii, (ग) i, (घ) ii

3. (क) एक राजा; (ख) शीशा; (ग) ईर्ष्या; (घ) एक छोटा-सा मकान; (ङ) बेहोश; (च) जहर

4.

स्नोह्वाइट	सफेद थी।
बर्फ के समान	जादुई शीशा था।
कमरे में एक	थकी और भूखी थी।
स्नोह्वाइट बहुत	ताबूत बनवाया।
काँच का एक	बहुत सुंदर थी।

5. (क) रानी ने जादुई शीशे से; (ख) जादुई शीशे ने रानी से; (ग) बौने ने स्नोह्वाइट से; (घ) जादुई शीशे ने रानी से; (ङ) राजकुमार ने स्नोह्वाइट से

6. (क) क्योंकि स्नोह्वाइट का अर्थ है—बर्फ के समान सफेद।
(ख) उसे अपने सुदंर होने पर बहुत गर्व था।
(ग) क्योंकि जब भी वह जादुई शीशे से पूछती कि सबसे सुंदर कौन है तो वह कहता—स्नोह्वाइट है। इसलिए वह उससे ईर्ष्या करती थी।
(घ) पहले तो रानी ने एक बुढ़िया का रूप बनाया और सात बौनों के घर पर पहुँच गई। वह अपने साथ एक जहरीला कंघा ले गई थी। स्नोह्वाइट खिड़की पर बैठी थी। उसे स्नोह्वाइट को नीचे बुलाया और उसके बालों में कंघी करने लगी और उसी बीच उसने जहरीला कंघा उसके बालों में चिपका दिया। स्नोह्वाइट बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। दूसरा उसने किसान की औरत का वेष धारण करके सेब को दो भागों में काटकर लाल भाग स्नोह्वाइट को दिया और आधा सफेद भाग स्वयं खाने लगी। जैसे ही स्नोह्वाइट ने जहरीले सेब का एक टुकड़ा खाया वह गिर गई और मर गई।
(ङ) राजकुमार ताबूत को घोड़े पर लादकर अपने नगर की ओर चल पड़ा। रास्ते में घोड़े को ठोकर लगी। वह लड़खड़ा गया। उसी समय स्नोह्वाइट के मुँह से सेब का टुकड़ा बाहर आ गया और उसने आँखें खोल दीं।

7. (क) सफेद; (ख) नई, सुंदर; (ग) छोटा, सात; (घ) कुछ, स्वादिष्ट; (ङ) जादुई

8. (क) स्नोह्वाइट; (ख) शीशा; (ग) ताबूत; (घ) बौने

खण्ड (ब)

1. स्नोह्वाइट एक राजा की पुत्री थी।
2. वह बहुत सुंदर थी।
3. वह बौनों के घर में सारा काम करती थी।
4. उसके बाल काली घटाओं के समान काले थे।

- यह कहानी हमें बहुत अच्छी लगी। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए। अगर हमने स्नोह्वाइट की सौतेली माँ की तरह अहंकार किया तो हमारा भी वही हाल होगा जो उसका हुआ।

पाठ-3 एक नई प्रजाति के भिखमंगे

खण्ड-अ

1. (क) गली-बाजार में, मंदिर-मस्जिद के आसपास रेल-बसों आदि में।
(ख) हम भिखारी को पैसे, कपड़े और खाना देते हैं।
(ग) फटे-पुराने वस्त्रों में लिपटे, हाथ में कटोरा लिए हुए भीख माँगते हुए दिखाई देते हैं।
(घ) इस प्रजाति के भिखमंगे अपने विशेष सामाजिक स्थान और मान रखते हैं। इनमें साधारण किस्म के भिखमंगों जैसा कोई लक्षण नहीं पाया जाता है। सबसे बड़ी बात तो यही है कि आप इन भिखमंगों को आसानी से पहचान भी नहीं सकते हैं। ये वे भिखमंगे हैं जो खाते-पीते तन-बदन पर देसी घी की अच्छी-खासी चर्बी चढ़ने के बावजूद, महँगी खादी के चमचमाते दूधिया वस्त्र पहन कर भीख के व्यवसाय को संपन्न करते हैं। उस पर भी अपने हाथों में छोटा-बड़ा कटोरा लेकर नहीं, बल्कि मजबूती से सिलवाई गई कपड़े की बड़ी-बड़ी थैलियाँ लेकर। इन भिखमंगों की तो बात ही निराली है। ये मतवाले देश की साधारण जनता से भीख माँगने की रस्म तो कभी-कभार ही अदा करते हैं, अन्यथा तो देश अथवा समाज के प्रभावशाली और धनाढ्य लोगों के पास ही अपनी बड़ी-बड़ी खाली थैलियाँ पहुँचाते हैं, जो उनमें ठूँस-ठूँसकर नोट भरके ही उन्हें वापस करते हैं। असल में ये हमारे देश के पूँजीपतियों के स्टैंडर्ड के भिखमंगे होते हैं। जबकि साधारण भिखमंगे फटे-पुराने वस्त्र पहनकर, कटोरा लेकर भीख माँगते हैं।
(ङ) छोटे-मोटे लोगों से भीख माँगना तो इनके लिए कुएँ में डूब मरने वाली बात होती है। लाखों-करोड़ों का माल डकार कर भी हमेशा भूखी बकरी की तरह मिमियाते रहते हैं और देश अथवा समाज के प्रभावशाली और धनाढय लोगों के पास ही अपनी खाली थैलियाँ पहुँचाते हैं अर्थात् भीख माँगते हैं।

2. (क) i, (ख) i, (ग) ii, (घ) ii

3. (क) भिखमंगे; (ख) प्रजाति; (ग) विशेष; (घ) सामाजिक; (ङ) थैलियाँ; (च) खरपतवार, (छ) दबंग

4.

भिखमंगे	भिखमंगों की नई प्रजाति
पिछले कुछ वर्षों से	भूखी बकरी की तरह मिमियाते रहते हैं,
मजबूती से सिलवाई गई	कानून की चपेट में आ चुके हैं
लाखों-करोड़ों का माल डकार कर	कपड़े की बड़ी-बड़ी थैलियाँ
बहुत-से भिखमंगे	गली-बाजार, रेल-बसों आदि में

5. (क) पिछले कुछ सालों से हमारे देश में भिखमंगों की एक विशेष प्रजाति पैदा हो गई है जो कि साधारण भिखारियों से भिन्न है। वह खाते-पीते, महँगी खादी के चमचमाते दूधिया वस्त्र पहनकर भीख के व्यवसाय को संपन्न करते हैं।
(ख) नई प्रजाति के भिखगंगे हाथों में कटोरा नहीं बल्कि मजबूती से सिलवाई गई कपड़े की बड़ी-बड़ी थैलियाँ धनाढय लोगों के पास पहुँचाते हैं जो उनमें ठूँस-ठूँसकर नोट भरकर वापस करते हैं।

6. (क) भिखमंगे समाज में भ्रष्टाचार की सच्चाई को प्रकट करते हैं। यह भिखमंगे हमारे समाज को बदनाम कर रहे हैं।
(ख) इनकी बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए यह कहना कतई गलत नहीं कि यदि स्थिति यही रही तो एक दिन समस्त आर्थिक शक्तियाँ इनकी दास बनकर रह जाएँगी तथा हम साधारण देशवासी इन बड़े भिखमंगों के सामने भिखमंगे बन कर खड़े नजर आएँगे।
(ग) भ्रष्ट राजनेता राष्ट्र व समाज में रिश्वत लेकर, लोगों से गैरकानूनी काम कराकर और उनसे बदले में पैसे बटोरकर हानि पहुँचा सकते हैं।
(घ) इस प्रजाति के भिखमंगे अपने विशेष सामाजिक स्थान और मान रखते हैं। इनमें साधारण किस्म के भिखमंगों जैसा कोई लक्षण नहीं पाया जाता है। सबसे बड़ी बात तो यही है कि आप इन भिखमंगों को आसानी से पहचान भी नहीं सकते हैं। ये वे भिखमंगे हैं जो खाते-पीते तन-बदन पर देसी घी की अच्छी-खासी चर्बी चढ़ने के बावजूद, महँगी खादी के चमचमाते दूधिया वस्त्र पहन कर भीख के व्यवसाय को संपन्न करते हैं। उस पर भी अपने हाथों में छोटा-बड़ा कटोरा लेकर नहीं, बल्कि मजबूती से सिलवाई गई कपड़े की बड़ी-बड़ी थैलियाँ लेकर। इन भिखमंगों की तो बात ही निराली है। ये मतवाले देश की साधारण जनता से भीख माँगने की रस्म तो कभी-कभार ही अदा करते हैं, अन्यथा तो देश अथवा समाज के प्रभावशाली और धनाढ्य लोगों के पास ही अपनी बड़ी-बड़ी खाली थैलियाँ पहुँचाते हैं, जो उनमें ठूँस-ठूँसकर नोट भरके ही उन्हें वापस करते हैं। असल में ये हमारे देश के पूँजीपतियों के स्टैंडर्ड के भिखमंगे होते हैं। जबकि साधारण भिखमंगे फटे-पुराने वस्त्र पहनकर, कटोरा लेकर भीख माँगते हैं।
(ङ) स्वयं कीजिए।

7. (क) मजबूर—लाचार होकर वह घर में पड़े बासी टुकड़े खाने लगी।
(ख) काम धंधा—राम का व्यवसाय अच्छा चल रहा है।
(ग) लौटा हुआ—मेरे कहने पर उसने पुस्तक वापस कर दी।
(घ) प्रार्थना—भिखारी ने पूरे दिन भीख माँगी।
(ङ) जो किसी से न दबे—वह गाँव को दबंग है।

8. परि + वेश; भिख + मंगा; प्र + जाति; अन + आवश्यक

9. (क) अमीरी; (ख) पराया; (ग) अगला; (घ) असाधारण; (ङ) जाना; (च) अपमान

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 हर जीव का मोल

खंड-अ

1. (क) स्वयं कीजिए।
(ख) राजा ने सोचा कि संसार में इस बात की खोज की जाए कि कौन-से जीव-जंतुओं का उपयोग नहीं है।
(ग) स्वयं कीजिए।

2. (क) iii, (ख) i, (ग) ii, (घ) i

3.

आज्ञा दी गई कि	बिलकुल बेकार हैं।
जंगली मक्खी और मकड़ी	आक्रमण कर दिया।
शक्तिशाली राजा ने	हर जीव का मोल है।
राजा को राजपाट	जीव-जंतुओं की खोज करो।
भगवान की बनाई दुनिया में	छोड़ जंगल में जाना पड़ा।

4. (क) खोज (ख) आक्रमण (ग) हार (घ) मक्खी, डंक (ङ) गुफा, जाला

5. (क) राजा ने आज्ञा दी कि संसार में इस बात की खोज की जाए कि कौन-से जीव-जंतुओं का उपयोग नहीं हैं।

(ख) राजा ने जंगली मक्खी और मकड़ी को संसार में बेकार के जीव समझ कर उन्हें खत्म करने की बात सोची।

(ग) युद्ध में हार जाने के कारण राजा को अपना राजपाट छोड़कर जंगल में जाना पड़ा।

(घ) राजा थककर एक पेड़ के नीचे सो गया और एक जंगली मक्खी के नाक पर डंक मार जाने के कारण राजा की नींद खुल गई।

(ङ) राजा जब जान बचाकर गुफा के अंदर गया तब मकड़ियों ने गुफा के द्वार पर बड़ा सा जाला बुन दिया जिससे राजा के प्राण बच गए।

(च) अंत में राजा को अहसास हुआ कि संसार में कोई भी प्राणी या चीज बेकार नहीं होती है। अगर जंगली मक्खी और मकड़ी न होती तो उसकी जान न बच पाती।

(छ) इस कहानी से हमें संसार के हर जीव, प्राणी और चीजों के मोल का पता चलता है। यह पता नहीं होता है। भगवान की बनाई दुनिया में हर जीव का मोल होता है, कब, कहाँ, किसकी जरुरत पड़ जाए।

6. (क) आदेश अनुमति (ख) दुनिया जगत
(ग) आविष्कार ढूँढ़ना (घ) सम्राट नृप
(ङ) हमला धावा (च) संग्राम लड़ाई
(छ) बैरी दुश्मन (ज) प्राण जीवन

7. (क) गुरुत्वाकर्षण की खोज न्यूटन ने की थी।
(ख) यह संसार विभिन्न जीव-जंतुओं से भरा हुआ है।
(ग) रात में अचानक शेर ने गाँव वालों पर आक्रमण कर दिया।
(घ) चोर को मधुमक्खी ने डंक मार दिया।
(ङ) राजा जंगल से सुरक्षित लौट आए।
(च) स्कूल में अच्छे शिक्षकों की जरुरत है।
(छ) संसार के प्रत्येक प्राणी का अपना मोल होता है।

8. (क) शायद आज मेघना को आना था।
(ख) वह कहानी सुना चुका था।
(ग) चाची जी ने खाना बना लिया था।
(घ) आदी क्रिकेट खेल चुका था।
(ङ) बालक पढ़ रहा था।
(च) रश्मि खेल रही थी।
(छ) दादा जी सो रहे थे।

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए

पाठ-5 इनाम का हकदार

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) i

3. (क) स्वतंत्रता, पढ़ने लिखने, (ख) राजपुर, रामप्रसाद, (ग) ढिंढोरा, मेहनत, (घ) रामप्रसाद, साथियों, (ङ) आश्चर्य, गर्व, (च) गंगाराम, छलछला

4.

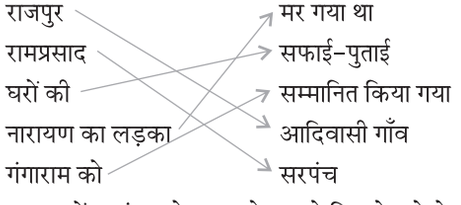

5. (क) राजपुर में स्वतंत्रता के बाद लोग पढ़ने लिखने लगे थे।
(ख) रामप्रसाद गाँव के सरपंच थे। वे बहुत अच्छे व्यक्ति थे। वे सदैव दूसरों की सहायता करने के लिए तैयार रहते थे।
(ग) रामप्रसाद ने घोषणा करवाई कि इस बार दीपावली की रात जिसका घर सबसे अधिक सुंदर सजेगा उसे इनाम दिया जाएगा।
(घ) रामप्रसाद इसलिए चौंक गए क्योंकि गंगाराम के घर के अंदर और बाहर सिर्फ एक-एक दीया जल रहा था।
(ङ) गंगाराम ने कहा कि हमारे यहाँ रिवाज है यदि किसी के घर मौत हो जाए तो सालभर त्योहार नहीं मनाते और त्योहार पर कोई भी उसके घर जाना अशुभ मानता है और हमारे पड़ोसी नारायण का लड़का मर गया है मैंने नारायण को समझाया और अपने पैसों से सारा सामान खरीदकर उसके घर दे आया।
(च) सरपंच रामप्रसाद ने गंगाराम को गले से इसलिए लगा लिया क्योंकि दीपावली तो सभी मनाते है किंतु सच्ची दीपावली उसी ने मनाई थी।
(छ) समारोह में गंगाराम को सम्मानित किया गया क्योंकि उसने किसी दूसरे घर में दीपक जलाकर दीपावली मनाई थी।

6. (क) बड़ा (ख) पराए
(ग) अपमानित (घ) पीछे
(ङ) शहर (च) अनेक

7. (क) चिंतामुक्त (ख) निर्भय
(ग) पापरहित (घ) अनाथ
(ङ) अतुलनीय (च) शैशवास्था

8. (क) आजादी (ख) ग्राम
(ग) मानव (घ) अच्छा
(ङ) दिवस (च) रात्रि
(छ) परिश्रम (ज) गृह

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 रब्बी का सपना

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) i

3. (क) पॉलैंड, (ख) किनारों, संतरी, (ग) सुराग, (घ) खड़े, देखने, (ङ) सरपट

4.

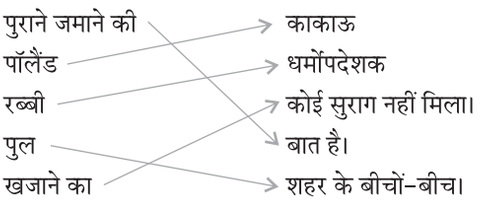

5. (क) काकाऊ पॉलैंड के एक शहर में स्थित है।
(ख) रब्बी को सपने में एक आवाज सुनाई दी कोई उससे कह रहा था कि वह शहर के बीचोबीच स्थित पुल पर जाए वहाँ उसे खजाना मिलेगा।
(ग) रब्बी को पुल के किनारे दो संतरी दिखे।
(घ) रब्बी कई बार पुल के इस तरफ से उस तरफ गया किंतु उसे कोई खजाना नहीं मिला इसलिए उसने महसूस किया कि वह मूर्ख बन गया है।

(ङ) एक संतरी ने पुल के पास जाकर रब्बी से पूछा कि आप यहाँ क्या ढूढ़ रहे है क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ यह सुनकर रब्बी ने राहत की सांस ली कि अब वह किसी से अपने मन की बात कह सकता है।

(च) रब्बी की बात सुनकर संतरी जोर-जोर से इसलिए हंसने लगा क्योंकि वह सपनों की बातों पर यकीन नहीं करता था।

6. (क) रब्बी एक यहूदी धर्मोपदेशक थे।
(ख) डोली के पास अनोखी गुड़िया है।
(ग) राजा के खजाने को डाकू लूट कर ले गए।
(घ) रब्बी ने सपने को नजरअंदाज कर दिया।
(ङ) पुल पर दो संतरी खड़े थे।

7. (क) अद्‌भुत (ख) वाणी
(ग) स्वप्न (घ) रात्रि

8. (क) से (ख) का (ग) ने (घ) को

9. (क) रोहन को नहाना है।
(ख) माताजी ने पत्र पढ़ लिया है।
(ग) वह बाजार में गया।
(घ) अध्यापक कुर्सी पर बैठ गए।

10. (क) गाँव (ख) दिन
(ग) आकर (घ) पिछला
(ङ) पड़ा (च) शुरु

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 एलबम

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii

3. (क) मोहर, (ख) पुरोहित, विवशता, (ग) अत्याचारी, भलेमानस, (घ)कोयले, हीरा, (ङ) कोलकाता, एलबम, (च) ज्यादा, काँप, (छ)पाँच सौ, (ज) पत्नी, घबराकर

4.

शादीराम ने	कुछ और ही मंजूर था।
इसी तरह से	आगे बढ़कर कहा।
भाग्य को	कई साल बीत गए।
लाला सदानंद ने	चिरंजीवी रखे।
परमात्मा आपको	ठंडी साँस भरी।

5. (क) शादीराम ने स्वयं से कहा
(ख) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम से
(ग) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम से
(घ) पंडित शादीराम ने लाला सदानंद से
(ङ) लाला सदानंद ने पंडित शादीराम से

6. (क) पंडित शादीराम की चिंता का कारण उनका कर्ज था।
(ख) पंडित शादीराम ने साहूकार सदानंद से कर्ज लिया था।
(ग) फोटो एलबम एक सेठ ने एक हजार में खरीदा था।
(घ) पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोई उनका एलबम खरीद लेगा।
(ङ) एकाएक लाला सदानंद बेसुध हो गये तो उनकी पत्नी दूध लेने दौड़ी।

7. (क) मकान बनवाने में काफी पैसा खर्च हो गया।
(ख) शादीराम ने सदानंद से ऋण लिया था।
(ग) चंपक बच्चों की मनपसंद पत्रिका है।
(घ) चोरों ने सारा घर उलट-पुलट कर दिया।
(ङ) चित्रकार ने रुपा की बहुत अच्छी तस्वीर बनाईं।
(च) श्यामलाल पान खाने के शौकीन हैं।
(छ) बच्चों ने प्रार्थना में हिस्सा लिया।

8. (क) श्वास (ख) कर्ज
(ग) इकट्ठा (घ) रोशनी
(ङ) माह (च) तस्वीर
(छ) चिट्ठी (ज) दिमाग

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 प्रायश्चित्त

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii, (घ) i

3. (क) कबरी, कमर, (ख) खिसक, (ग) खबर, पड़ोस, (घ) ग्यारह, बिल्ली (ङ) पंडित, जमकर

4. (क) महरी ने रामू की माँ से कहा
(ख) रामू की माँ ने महरी से कहा
(ग) किसनू की माँ ने पंडित से कहा
(घ) पंडित परमसुख ने रामू की माँ से कहा
(ङ) छन्नू की दादी ने रामू की माँ से कहा

5. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓

6. (क) कबरी बिल्ली को जब भी मौका मिलता वह घी-दूध पर जुट जाती। वह रामू की बहू से नजर बचाकर सारीचीजें चट कर जाती। जिससे रामू की बहू का खाना-पीना सब दुश्वार हो गया था। इस तरह रामू की बहू की तो जान आफत में थी और कबरी बिल्ली की मौज थी।

(ख) रामू की बहू द्वारा बिल्ली की हत्या किए जाने पर सभी लोग रामू की माँ को सिखाने में लगे थे कि बिल्ली की हत्या का पाप सिर चढ़ेगा क्योंकि बिल्ली की हत्या आदमी की हत्या करने जैसा है। इसके लिए प्रायश्चित्त तो करना पड़ेगा।

(ग) रामू की बहू द्वारा बिल्ली की हत्या किए जाने पर पंडित जी ने रामू की माँ को समझाया कि शास्त्रों में प्रायश्चित्त का विधान है।

(घ) रामू की माँ पंडित जी से प्रायश्चित्त करने का विधान पूछ रही थी तो उन्होंने काफी ज्यादा खर्च बता दिया तो रामू की माँ दुखी होकर बोली अब तो जैसा कह दोगे वैसा ही करना पड़ेगा।

7. (क) घर का सारा सामान कबरी बिल्ली खा जाती थी। रामू की बहू जो कुछ भी बनाती। नजर बचाकर कबरी बिल्ली खा जाती। दूध, घी, मलाई, खीर और भी कई चीजें बिल्ली खा जाती थी। इस कारण रामू की बहू की जान आफत में थी।

(ख) रामू की बहू ने बिल्ली की मोर्चाबंदी करने के लिए एक कटघरा मँगवाया उसमें बिल्ली को पसंद आने वाले व्यंजन रखे लेकिन बिल्ली ने उन पर निगाह तक न डाली।

(ग) रामू की बहू ने खीर बनाकर कमरे में एक ऐसे ऊँचे ताख पर रख

दी जहाँ बिल्ली न पहुँच सके। कमरे में बिल्ली आई और ताख के नीचे खड़े होकर सूँघा और उसको माल अच्छा लगा रामू की बहू के जाते ही उसने छलाँग मारी पंजा कटोरे में लगा और कटोरा फर्श पर आ गिरा और बिल्ली ने डटकर खीर खाई।

(घ) बिल्ली को मारने के लिए पाटे का प्रयोग किया गया।

(ङ) बिल्ली मारने के बाद रामू की बहू से सभी प्रश्न करने लगे। मिसरानी ने कहा कि बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या एक बराबर है। प्रायश्चित्त करना ही होगा।

(च) पंडित जी ने पंडिताइन से खाना बनाने के लिए मना किया क्योंकि पकवानों को हाथ लगाना पड़ेगा।

(छ) ग्यारह तोले की बिल्ली बनवाने की बात तय हुई।

8. (क) स्तुति उपासना (ख) गृह भवन

(ग) दुग्धपय (घ) स्वर्ण कंचन

(ङ) पुष्प प्रसून (च) जननी अंबा

9. (क) शेर को देखते ही हिरन की जान आफत में आ गई।

(ख) बिल्ली के कारण रामू की बहू का खाना-पीना दुश्वार हो गया था।

(ग) प्रभात ने हाई स्कूल की परीक्षा के लिए कमर कस ली है।

(घ) बच्चों को अगर उनकी गलतियों पर ना डाँटे तो उनके हौंसले बढ़ जाते हैं।

(ङ) हम यह संपत्ति ही बेच देते हैं; इस तरह ना रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

10. (क) परमसुख, पन्ने, अक्षर, उँगलियाँ, हाथ, चेहरा, बिल्ली

(ख) और, कुछ, पर, बल, बहुत

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 साँस-साँस में बाँस

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) ii

3. (क) उत्तर-पूर्वी, (ख) खूब प्रचलन, (ग) खपच्चियों, (घ) चिकना

4. (क) आमतौर पर एक से तीन साल की उम्र वाले बाँस काटते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी जाते हैं। युवा बाँस मुलायम होते हैं उन्हें इतनी आसानी से काटा नहीं जा सकता है।

(ख) बाँस से बनाई जाने वाली सबसे आश्चर्यजनक चीज टोकरी होती है क्योंकि इसको बहुत सारे प्रयोगों में लाया जा सकता है।

(ग) इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीजें बनानी शुरू की बाँस की चीजें भी तभी से बन रही हैं। आवश्यकता के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं।

(घ) बाँस के विभिन्न उपयोगों से संबंधित जानकारी देश के उत्तर-पूर्वी भाग के असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और मेघालय के संदर्भ में दी गई हैं।

5. (क) हाथों की कलाकारी से वस्तुओं को सुंदर बनाया जाता है।

(ख) सावन के महीने में घनघोर बारिश होती है।

(ग) सर्दी के मौसम में स्वेटर-बुनाई का सफर चलता है।

(घ) दर्जी ने कपड़ा आड़ा-तिरछा काट दिया।

(ङ) खपच्चियों से डलियानुमा टोकरी बनाई जाती है।

(च) सभी विद्यार्थियों ने अध्यापक के कहे मुताबिक कार्य को पूर्ण किया।

6. (क) आवट, लिखावट, दिखावट, मिलावट

इस स्वेटर कीबुनावट बहुत बारीक हैं

(ख) ईला, रंगीला, चमकीला, शर्मीला

प्राचीन काल में पत्थरों के नुकीले औजार बनाए जाते थे।

(ग) आव, बहाव, बचाव, कटाव

हमें बेवजह किसी पर दबाव नहीं डाल चाहिए।

(घ) आई लिखाई पढ़ाई चढ़ाई

नए मकान में फर्श की घिसाई का काम चल रहा है।

7. (क) वहाँ बाँस की अनेक चीजें बनाई जाती हैं।

(ख) हम यहाँ पर बाँस से बनी कुछ चीजों के बारे में ही बता पाए हैं।

(ग) उदाहरण के लिए आसन जैसी छोटी चीजों को बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है।

(घ) खपच्चियों से विभिन्न प्रकार की टोपियाँ बनाई जाती हैं।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 चेतक की वीरता

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) i, (घ) ii

3. (क) राणा प्रताप का घोड़ा चेतक युद्ध क्षेत्र में इतनी तेजी से आगे बढ़ रहा था कि उसकी छवि देखते ही बनती थी। वह सभी घोड़ों से निराला था।

(ख) युद्ध क्षेत्र में राणा प्रताप के जरा-सा भी मुड़ने से पहले चेतक मुड़ जाता था। अर्थात् राणा प्रताप के द्वारा आज्ञा देने से पहले ही वह जान लेता था कि राणा को किस ओर चलना है।

(ग) राणा प्रताप के हाथों से भाला और तरकश दोनों गिर गए थे किंतु चेतक की टापों की आवाज कम नहीं हुई वह निरंतर दौड़ता रहा।

(घ) चेतक राणा प्रताप का इतना आज्ञाकारी घोड़ा था कि उसको बात मनवाने के लिए कभी भी राणा प्रताप को कोड़ा मारने की जरूरत नहीं पड़ी।

4. (क) राणा <u>प्रताप के</u> घोड़े से,

पड़ <u>गया हवा का</u> पाला था।

(ख) जो तनिक <u>हवा से बाग हिली</u>,

<u>लेकर सवार उड़</u> जाता था।

(ग) राणा <u>की पुतली फिरी</u> नहीं,

<u>तब तक चेतक मुड़</u> जाता था।

5. (क) रण-बीच राणा प्रताप का घोड़ा चौकड़ी भर रहा था क्योंकि राणा प्रताप युद्ध कर रहे थे।

(ख) ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि वह राणा प्रताप का बहुत आज्ञाकारी घोड़ा था।

(ग) राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।

(घ) दुश्मनों की सेना पर चेतक भयानक रूप तथा अत्यधिक कठोर बादल का रूप लेकर कहर बनकर छा गया।

(ङ) चेतक ने रणभूमि में अपनी तेज चाल से अपना कौशल दिखाया और भयानक भालों के बीच में डटकर दौड़ता रहा। वह तेजी से चलती हुई ढालों के बीच में भी सरपट दौड़ता रहा।

(च) चेतक का ऐसा निराला रूप देखकर शत्रु की सेना हैरान रह गई।

6. (क) तीर शर सायक
(ख) अश्व तुरंग घोटक
(ग) वायु पवन समीर
(घ) काया देह शरीर
(ङ) आकाश गगन अंबर

7. (क) उठना (ख) मनमोहक
(ग) धरती (घ) भीरु
(ङ) अधिक (च) मित्र

7. (क) दौड़ — राघव ने दौड़ की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
(ख) तनिक — तुम्हें वहाँ जाने में तनिक भी देर नहीं करनी चाहिए।
(ग) कौशल — चेतक की चाल में भी बहुत कौशल था।
(घ) सरपट — राणा प्रताप का घोड़ा चेतक सरपट दौड़ता चला जा रहा था।
(ङ) विकराल — महाभारत में श्रीकृष्ण ने अपने विकराल रूप के दर्शन अर्जुन को दिए।
(च) समाज — समाज में रहकर हमें किसी से बैर नहीं करना चाहिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 ऐसे-ऐसे

खंड-अ

2. (क) iii , (ख) ii, (ग) iii

3. (क) माँ ने पिताजी से कहा
(ख) पिताजी ने माँ से कहा
(ग) वैद्य जी ने पिताजी से कहा
(घ) डाक्टर ने माँ से कहा
(ङ) मास्टर जी ने माँ से कहा

4. (क) माँ मोहन के ऐसे-ऐसे कहने पर इसलिए घबरा रही थी क्योंकि मोहन हाथ से बताता है उँगलियाँ भींचता है। तो माँ को लगता है कोई भयानक बीमारी हुई है।
(ख) पेट दर्द, कान में दर्द, स्कूल का कार्य पूरा ना होना, लाइट ना आना, मेहमानों का आ जाना, हाथ में दर्द होना, सिर में दर्द होना आदि ऐसे बहाने होते हें, जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं।
(ग) यदि मोहन के पेट में सचमुच ही दर्द होता, तब कोई भी उसकी बात पर विश्वास नहीं करता। क्योंकि मोहन ने पेट में ऐसे-ऐसे होने की असली वजह नहीं बताइ कि उसने स्कूल का कार्य पूर्ण नहीं किया है। इससे मोहन के पेट का दर्द बढ़ता ही रहता और वह बड़ी मुसीबत में फँस जाता।

5. इस स्थिति में मोहन को डॉक्टर और वैद्य द्वारा दी गई दवाई को खानी होती और आराम करना होता। उसका बाहर खेलने जाना भी कुछ दिन के लिए बंद हो जाता। यही इस नाटक का अंत होता।

6. (क) बताना : शिवम ने कपड़े अलमारी में रखे
(ख) मना करना : शिवम ने कपड़े अलमारी में नहीं रखे।
(ग) पूछना : शिवम ने कपड़े कहाँ रखे?
(घ) आदेश देना : शिवम कपड़े अलमारी में रख दो।

7. (क) कार्यालय (ख) आनंद
(ग) उजाला (घ) चिकित्सक
(ङ) अधिक (च) पीड़ा
(छ) रोग (ज) पीठ
(झ) विद्यालय (ञ) भय

8. (क) अच्छा (ख) काला
(ग) जाना (घ) शांत
(ङ) मूर्ख (च) ठंडा
(छ) लेना (ज) पुरानी
(झ) झूठ (ञ) सवाल

9. (क) रमेश स्कूल से तो भला-चंगा आया था।
(ख) राक्षस ने जोर से अट्टाहस किया।
(ग) छुट्टी के दिन बच्चे सारा दिन धमा-चौकड़ी करते हैं।
(घ) पढ़ते-पढ़ते सुरेश को सहसा नींद आ गई।
(ङ) दूसरों के गलत व्यवहार से मुझे बहुत तकलीफ़ होती है।
(च) बौद्ध ने दवाई की पुड़िया दे दी।
(छ) डॉक्टर ने नब्ज देखकर बीमारी का पता बताया।

10. (क) बेचारा (ख) डॉक्टर
(ग) तीमारी (घ) उँगलियाँ
(ङ) तबियत (च) खुराक
(छ) वैद्य (ज) अट्टहास

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 फिर गधे से गधा

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) ii, (ग) iii, (घ) i

3. (क) धोबी, (ख) धोबिन, लड़का, (ग) मोती, मौलवी, (घ) संदूक, जंगल, (ङ) धोबिन, अफसर, (च) दरबान, कचहरी

4. (क) मौलवी ने बच्चों से कहा
(ख) धोबी ने धोबिन से कहा
(ग) काजी ने धोबी से कहा
(घ) धोबी ने काजी से कहा

5. (क) मौलवी गाँव के बच्चों को पढ़ाने का काम करता था। वह अपने घर पर ही स्कूल लगाता था।
(ख) मौलवी की बात सुनकर धोबी दौड़ा-दौड़ा घर गया।
(ग) धोबिन इसलिए खुश हुई क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था अब वे अपने गधे को आदमी बनवाकर बच्चे की पूर्ति करना चाह रहे थे।
(घ) छह महीने बीत जाने पर धोबी मौलवी के पास गया और मौलवी ने बताया कि तुम्हारा गधा अब बनारस का काजी बन गया है।
(ङ) काजी ने धोबी को इसलिए बुलाया क्योंकि जहाँ-जहाँ काजी मुड़ता धोबी उसको दाने का थैला दिखाता था।
(च) काजी ने धोबी को धक्के देकर बाहर इसलिए निकलवा दिया क्योंकि वह काजी को अपना गधा मोती समझ रहा था।
(छ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक चालाक व्यक्ति मूर्ख व्यक्ति को आसानी से पागल बना सकता है एवं उससे आसानी से धन वसूल किया जा सकता है जिस प्रकार धोबी ने दो बार अपने ही गधे के लिए रकम अदा की क्योंकि उसमें अक्ल की कमी थी।

6. (क) उसने, पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) मेरे कोई, अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(ग) तुम, प्रश्नवाचक सर्वनाम
(घ) इसने, मुझे निश्चयवाचक सर्वनाम
(ङ) उस, पुरुषवाचक सर्वनाम

7.

अनुस्वार	**अनुनासिक**
कंगाल	खूँखार
शृंगार	चाँद
संशय	आँगन
चंचल	बाँसुरी
अंकुर	दाँत, आँख
अंगूर, दिनांक	हँस

8. (क) चुहिया (ख) लुहार
(ग) रानी (घ) हथिनी
(ङ) पुत्री (च) मामा
(छ) धोबी (ज) दास

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 अक्षरों का महत्त्व

2. (क) ii, (ख) ii, (ग) i, (घ) i

3. (क) अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई है। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जब से लिखना शुरू किया तब से 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब शुरू होता है जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं।
(ख) अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छ हजार साल हुए हैं। प्रागैतिहासिक काल में मानव पहले चित्रों के जरिए अपने भाव व्यक्त करता था। चित्र संकेतों के बाद भाव-संकेत अस्तित्व में आए तब जाकर काफी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की।
(ग) अक्षरों के ज्ञान से पहले मनुष्य अपनी बात को दूर-दराज के इलाकों तक पहुँचाने के लिए चित्रों का सहारा लेता था।
(घ) अक्षरों के महत्त्व की तरह ध्वनि का भी हमारे लिए अत्यन्त महत्त्व है। ध्वनि के द्वारा ही हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं और दूसरों के विचारों को समझते हैं। ध्वनि हमें विविध प्रकार के विचारों की तीक्ष्णता और गहराई को समझाती है। ध्वनि के अभाव में अपने विचारों को व्यक्त करना लगभग असंभव हो जाता है।

4.

	मूलशब्द	**उपसर्ग**
(क)	सफल	अ
(ख)	दृश्य	अ
(ग)	उचित	अनु
(घ)	आवश्यक	अन

5. (क) गाड़ी में छह लीटर पैट्रोल ड़ाल दीजिए।
(ख) मुझे दो किलो आम लेने हैं।
(ग) सूट के लिए तीन मीटर कपड़ा दे दो।
(घ) एक कटोरी खीर दे दो।
(ङ) ट्रक में भरी रेत एक एकड़ जमीन के लिए पर्याप्त है।

6. (क) किताब (ख) जगत
(ग) प्रतिदिन (घ) अखबार
(ङ) राष्ट्र (च) वर्ष

7. (क) नए (ख) मरण
(ग) एक (घ) अंत
(ङ) असभ्य (च) अज्ञान

8. (क) दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं।
(ख) लता मंगेश्कर करोड़ों दिलों पर राज करती हैं।
(ग) ईश्वर संपूर्ण जगत में विद्यमान हैं।
(घ) प्राचीनकाल में पत्थरों के औजार बनाए जाते थे।
(ङ) अक्षर-ज्ञान के कारण ही इतिहास का अस्तित्व मौजूद है।
(च) कृषि की खोज नवपाषाण काल में हुई थी।

9. (क) अक्षर (ख) तादाद
(ग) कल्पना (घ) अस्तित्व
(ङ) वनस्पति (च) लिपि

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 मीरा के पद

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) ii, (घ) iii

3. (क) पूँजी, (ख) नाव, सतगुरु (ग) कुसंग, सुनि, (घ) खारी, काँची, (ङ) भगति

4. (क) मीरा कहती है कि मेरे सतगुरु ने मुझे बहुत ही अमूल्य वस्तु दी है।
(ख) मेरे सतगुरु ने मुझे ऐसी अमूल्य वस्तु दी है जो न कभी खर्च होगी और न ही कोई चोर चुरा सकता है।
(ग) काम, क्रोध, अभिमान और लोभ, मोहमाया को मैने अपने चित्त से निकाल दिया है।
(घ) संपूर्ण शृंगार करके, पैरों में घुँघरू बाँधकर मीरा लोक-लाज त्याग कर नाची। वह इस रूप में नृत्य किया करती थी।
(ङ) मीरा को अपने प्रभु गिरिधर लाल की भक्ति ही संपूर्ण संसार में याचना के योग्य लगती है।

5. (क) अमूल्य (ख) पाना
(ग) खोना (घ) जन्म
(ङ) बढ़ती है (च) कृपा
(छ) मन (ज) सत्य

6. (क) राम रूपी रत्न (ख) प्रत्येक जन्म
(ग) प्रत्येक दिन (घ) हरख-हरख कर
(ङ) राम का नाम (च) लोक की लाज

7. (क) शिक्षक अध्यापक आचार्य
(ख) पूँजी संपदा धन
(ग) हृदय अंतर्मन मनुआ
(घ) संत सन्यासी वैरागी
(ङ) मोहन पुरारी कान्हा

8. (क) अ - मूल्य (ख) सत् - गुरु
(ग) कु - संग (घ) सु-मति

खंड-ब स्वयं कीजिए।

पाठ-15 मेरी माँ

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) ii, (घ) i

3. (क) अशिक्षित, सदृश, (ख) परिश्रम, देवनागरी, (ग) अपेक्षा, उदार, (घ) प्राणदंड, (ङ) जीवन, प्रोत्साहन, (च) प्रेमभरी, सांत्वना, (छ) श्रद्धापूर्वक

4.

गृह-कार्य की शिक्षा	पुस्तकों का अवलोकन करतीं
सखी-सहेली की	जननी
देवनागरी की	दादी जी की छोटी बहन
जन्मदात्री	वाणा
प्रेमभरी	अक्षर-बोध करतीं

5. (क) बिस्मिल की माता जी का विवाह ग्यारह वर्ष की उम्र में शाहजहाँपुर में हुआ था।

(ख) माता जी को गृह कार्य की शिक्षा देने के लिए दादी जी ने अपनी छोटी बहन को बुलवाया था।

(ग) बिस्मिल की माता जी ने अपने मुहल्ले की सखी-सहेली से अक्षर-बोध सीखा। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वे देवनागरी पुस्ताकें का अवलोकन करने लगी।

(घ) बिस्मिल की माता जी ने उन्हें आदेश दिया कि अपने शत्रु को कभी प्राणदंड मत देना।

(ङ) बिस्मिल की माती जी ने उन्हें देश सेवा, धार्मिक जीवन के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति में भी सदैव सहायक रही।

(च) गुरु गोविंदसिंह की धर्मपत्नी ने गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाइयाँ बाँटी थीं।

(छ) रामप्रसाद बिस्मिल ने ईश्वर से इस इच्छापूर्ति की कामना की कि जन्म-जन्मांतर ऐसी ही माता जी दे।

6. (क) गाँव में अधिकतर लोग अशिक्षित होते हैं।

(ख) ग्रामीण काम की तलाश में शहर की तरफ आ रहे हैं।

(ग) शादी में खाने-पीने का अच्छा प्रबंध होता है।

(घ) स्वामी जी ने शिष्य से वार्तालाप प्रारंभ किया।

(ङ) अनेक क्रांतिकारियों ने देश के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया।

(च) सिपाहियों को मैदान का चक्कर लगाने का आदेश दिया गया।

7. परिश्रम, वार्तालाप, क्रांतिकारी, धृष्टतापूर्ण

8.

(क)	शिक्षित	(ख)	मरण
(ग)	बड़ी	(घ)	असामाजिक
(ङ)	अनुदार	(च)	श्रेष्ठ
(छ)	अपूर्ति	(ज)	अंत
(झ)	अमंगल	(ञ)	अवनति

9. (क) वे लोग बाज़ार गए हैं।

(ख) ये सभी वस्तुएँ ले जाओ।

(ग) लिखते-लिखते उसे ध्यान आया।

(घ) इस विषय में मैं अपना मत पहले ही बता चुका हूँ।

(ङ) बस तुम ही मेरे सच्चे शिष्य हो।

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 पेड़ की बात

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) ii, (घ) iii

3. (क) मिट्टी, रसपान, (ख) पानी, (ग) भीतर, (घ) प्रकट, ऊर्जा, (ङ) अनाज, सब्जी, (च) संचय, (छ) अकस्मात्

4.

जड़	भी दाँत नहीं होते।
तना	जो अंश माटी के अंदर होता है।
गाछ-बिरछ के	जीवन का मूल-मंत्र है।
खुर्दबीन से	जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है।
प्रकाश ही	अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ देखे जाते हैं।

5. (क) पौधे को परीक्षण करने के लिए गमले में औंधा लटकाया गया। परिणामस्वरूप उसकी पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ उठ आईं तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गई।

(ख) खुर्दबीन से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्टतया देखे जा सकते हैं।

(ग) अंगारक वायु— जब हम श्वास लेते हैं और उसे बाहर निकालते है तो एक बार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है उसे 'अंगारक वायु' कहते हैं। यदि यह जहरीली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु इकस सेवा करके नष्ट हो सकते हैं।

(घ) गाछ-बिरछ की यह कोशिश रहती है कि किसी तरह उन्हें थोडा-सा प्रकाश मिल जाए।

(ङ) मधुमक्खी और तितली साथ बिरछ की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती है। कुछ पतंगें दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते इसलिए रात के अंधेरे घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ सुगंध ही सुगंध फैला देते हैं।

(च) बीज को पकाने में मधुमक्खी का बहुत योगदान है। मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

(छ) अपने शरीर का रस पिलाकर बिरछ बीजों का पोषण करता है। अब अपनी जिंदगी के लिए उसे मोह-माया का लोभ नहीं है। तिल-तिल संतान की खातिर सब कुछ लुटा देता है।

6.

(क)	बारिश	बरसात	वर्षण
(ख)	बालक	लड़का	बच्चा
(ग)	विटप	पेड़	तरु
(घ)	देह	काया	तन

7.

(क)	अंदर	(ख)	कमजोर
(ग)	मृदु	(घ)	अँधेरा
(ङ)	ऊपर	(च)	अनेक
(छ)	सीधी	(ज)	खोकर

8. (क) राजकुमार ने अपने सुकोमल शरीर पर धनुष बाण धारण किया था।

(ख) अंकुर का एक अंश नीचे माटी में गड़ गया।

(ग) फलों से लदी डालियाँ झुक गई है।

(घ) खुर्दबीन से अनेक सूक्ष्म पदार्थ देखे जा सकते हैं।

(ङ) आसमान में अनगिनत तारे होते हैं।

(च) स्वास्थ्य के लिए बासी भोजन विषाक्त होता है।

खंड-ब स्वयं कीजिए।

पाठ-17 शिष्टाचार

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) i, (घ) iii

3. (क) हस्तिनापुर के साम्राज्य में पांडवों का कौरवों के ही बराबर हिस्सा था किंतु दुर्योधन उनका हिस्सा हड़पना चाहता था इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह उनको जरा भी हिस्सा नहीं देगा।

(ख) कौरवों से विनम्रता पूर्वक अपने हिस्से की माँग करने पर भी कौरवों ने इंकार कर दिया इस स्थिति में पांडवों को न चाहते हुए भी अपने बंधु-बाधवों से युद्ध करने का निर्णय लेना पड़ा।

4. (क) शंखनाद, प्रतीक्षा, (ख) युद्ध, (ग) विनम्रतापूर्ण, गद्‌गद, (घ) युधिष्ठिर, पश्चात्, (ङ) अनुमति

5. (क) पांडवों, (ख) अर्जुन, (ग) कौरवों

6. (क) श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दरबार में पांडवों के दूत बनकर गए।

(ख) युधिष्ठिर को अचानक कौरव-सेना की ओर अते देखकर दुर्योधन ने समझा कि युधिष्ठिर कौरवों की विशाल सेना देखकर डर गए हैं।

(ग) युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से निवेदन किया कि हम युद्ध नहीं करना चाहते। दुर्योधन के अन्यायपूर्ण व्यवहार ने हमें आपसे और कौरव सेना से युद्ध करने के लिए विवश किया है।

(घ) आचार्य द्रोणाचार्य ने युद्ध भूमि से युधिष्ठिर से कहा कि मुझे युद्ध में पराजित करना संभव नहीं है किंतु मेरी यह दुर्बलता है कि युद्ध के दौरान यदि किसी विश्वसनीय व्यक्ति से मेरे हृदय को आघात पहुँचे तो मैं अस्त्र-शस्त्र रख सकता हूँ और उस स्थिति में मेरा वध हो सकता है।

(ङ) युधिष्ठिर भीष्म पितामह और आचार्य द्रोण, कुलगुरु कृपाचार्य और मामा शल्य से आशीर्वाद प्राप्त करने गए।

7. (क) कचहरी में अपना पक्ष स्पष्ट करें।

(ख) महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बनें।

(ग) डाकूओं ने अचानक ही गाँव पर हमला कर दिया।

(घ) सुरेश अपने परीक्षाफल के लिए बहुत चिंतित है।

(ङ) युधिष्ठिर को धर्मराज भी कहा जाता था।

8. (क) संवाद पहुँचाने वाला (ख) संग्राम

(ग) इंतजार (घ) चिंतामग्न

(ङ) आनंद (च) नमस्कार

(छ) आज्ञा (ज) गुजारा करना

9. (क) शिष्ट (ख) कुरुक्षेत्र

(ग) आचरण (घ) भीष्म

(ङ) द्रोण (च) दुर्योधन

(छ) धर्मराज (ज) अग्रज

(झ) प्रणाम (ञ) धृतराष्ट्र

10. (क) अपादान कारक (ख) संबंध कारक

(ग) संबंध कारक (घ) संबंध कारक

(ङ) अधिकरण कारक (च) करण कारक

11. (क) र् + आ + ज् + अ + द् + अ + र् + अ + ब् + आ + र् + अ

(ख) क् + ऋ + प् + आ + च् + आ + र् + य्

(ग) स् + आ + र् + अ + थ् + ई

(घ) क् + उ + र + उ + क् + ष + ए + त् + र्

12. (क) उपकार (ख) चिर्‌काल

(ग) नीरोग (घ) आकार

खंड-ब स्वयं कीजिए।

पाठ-18 जलाओ दीये

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) ii, (घ) i

3. (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने यह भाव स्पष्ट किया है कि धरती पर इतने दीए जलाओ कि पूरी पृथ्वी का अंधकार मिट जाए अर्थात् धरती मानवता सहिष्णुता, एकता, समाजिकता रूपी दीए जलाओ जिससे पूरी पृथ्वी एकता के सूत्र में जगमगा उठे।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्पष्ट किया है कि बुराई, झूठ, नफरत, जैसे दुर्गुणों से मुक्ति का एक द्वार खुल जाए कि सुबह कभी जाना पाए और निराशा का अंधेरा कभी न होने पाए। दुख और नाउम्मीद रात्रि कभी न आने पाए।

4. (क) प्रस्तुत कविता दीवाली के त्योहार से संबंधित है।

(ख) कवि बुराई, झूठ, नफरत जैसे दुर्गुणों से मुक्ति की बात कर रहा है।

(ग) कवि आशा, प्रेम, सच्चाई, अहिंसा और एकता के दीए जलाने का संदेश दे रहा है।

(घ) जब तक प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के खून का प्यासा बना रहेगा और सदैव सर्वनाश का खेल चलता रहेगा तो मनुष्यता कभी पूर्ण नहीं हो सकती।

(ङ) नहीं सिर्फ दीपक की रोशनी से अँधेरा दूर नहीं हो सकता।

(च) कवि के अनुसार अँधेरा दूर करने के लिए विश्व के प्रत्येक द्वार पर उदासी दूर करना आवश्यक है। सभी व्यक्तियों में आपसी भाई चारा होना परमावश्यक है।

(छ) इस कविता के द्‌वारा हमें कवि आपसी भाई चारे, एकता और आशा के प्रकाश को देखने का संदेश देता है।

5. (क) दीपक (ख) अंधकार

(ग) मृदा (घ) आकाश

(ङ) भरा हुआ (च) नष्ट

(छ) मनुष्यता (ज) संसार

6. (क) उजाला (ख) पुरानी

(ग) बंधन (घ) संपूर्ण

7. (क) ईश्वरीय (ख) मनुष्यत्व

(ग) हिम्मती (घ) धरातलीय

(ङ) परिश्रमी (च) शांत

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 लोकगीत

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) i

3. (क) गाँवों, (ख) ताजगी, लोकप्रियता, शास्त्रीय, (ग) कल्पना, रोजमर्रा, (घ) बिदेसिया, लोकप्रिय, (ङ) बिरहा

4. (क) लोकगीतों के पक्ष–

इनमें लोच, ताजगी, लोकप्रियता है।

ये आदिवासियों और पहाड़ियों के प्रचलित गीत हैं। इनकी भाषा मुख्य रूप से गाँवों और इलाकों की बोलियाँ हैं। इनको समूह में गाया जाता है। इन गीतों का संबंध मुख्य रूप से स्त्रियों से हैं। इन गीतों को स्त्रियाँ मुख्य रूप से ढ़ोलक की मदद से गाती हैं।

इन गीतों को विभिन्न अवसरों एवं त्योहारों पर गाया जाता है।

(ख) स्त्रियों के प्रमुख गीत हैं- गरबा, रासिया, कजरी।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) स्वयं कीजिए।

5. (क) उपवन में जाते ही मन को कल्पना के पंख लग गए।

(ख) विवाह के समय गाए जाने वाले लोकगीत आनंददायक होते हैं।

(ग) परमात्मा की शक्तियाँ अनंत है।

(घ) गांधी जी एक लोकप्रिय नेता हैं।

(ङ) रामू के पास डाक-टिकटों का अच्छा संग्रह है।

6. (क) बाँसुरी (ख) ओराँव

(ग) संग्रह (घ) सारंग

(ङ) संबंध (च) संसार

(छ) झाँझ (ज) गाँव

7. (क) शास्त्र + ईय (ख) रचना + इता

(ग) अधिक + तर (घ) सफल + ता

(ङ) प्रकाश + इत (च) उल्लास + इत

(छ) वास्तव + इक (ज) दल + ईय

8. (क) महिला (ख) पर्वत

(ग) सम्राट (घ) वन

9. (क) बासी (ख) अलोकप्रिय

(ग) अपेक्षा (घ) सवाल

(ङ) अवास्तविक (च) असफलता

(छ) अंत (ज) नवीन

10. (क) पुरुष (ख) प्रेमिका

(ग) रानी (घ) कवयित्री

(ङ) नर्तकी (च) गायिका

11. (क) लोकप्रिय (ख) बाँसुरी

(ग) शास्त्रीय (घ) संग्रह

(ङ) प्रकाशित (च) राजस्थानी

(छ) ऋतु (ज) गुजरात

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

BOOK-7

पाठ-1 उड़ चल हारिल

खण्ड-अ

1. (क) हारिल तिनके से घोंसला बनाता है।

(ख) सृष्टि का निर्माण।

(ग) जीवन साधन की अवहेलना करना कर्मवीर का कर्म नहीं है।

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) i

3. (क) शक्ति रहे तेरे हाथों में
छूट न जाए चाह सृजन की
शक्ति रहे तेरे पाँवों में
रुक न जाए यह गति जीवन की!

(ख) तिनका तेरे हाथों में है
अमर एक रचना का साधन
तिनका तेरे पंजे में है
विधना के प्राणों का स्पंदन!

4. (क) काँपन, यद्यपि दसों दिशा में तुझे शून्य नभ घेर रहा है।

(ख) आज इसी उर्ध्वंग ज्वाल का तू है दुर्निवार हरकारा दृढ़ ध्वजदंड बना यह तिनका सूने पथ का एक सहारा।

5. (क) कवि हारिल को प्रेरित कर रहा है कि वो जो भी कर रहा है, वो अच्छा है, पवित्र है और अपने जीवन को अपने अंदाज में जीने के लिए स्वतंत्र है।

(ख) शक्ति से निर्माण होता है और गति से जीवन आगे बढ़ता है।

(ग) कर्मवीर का अर्थ है जो परिश्रमी होता है। संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसे कर्मवीर नहीं कर सकते। कार्य चाहे कितना भी कठिन हो किंतु वो उससे परेशान होकर काम को छोड़ते नहीं।

6. (क) दूध पीने से हमें शक्ति मिलती है।

(ख) नभ में पक्षी उड़ रहा है।

(ग) मिट्टी में खाद ड़ालने से वह अच्छी हो जाती है।

(घ) हम अपनी नई सोच से सृष्टि परिवर्तन कर सकते हैं।

(ङ) हमें अच्छे कर्म करने चाहिए।

7. सोना, चलना, मरण, अनेक, कल, धरा, कल, अनिच्छा, अनिश्चय, रात, संध्या, लेना

8. तिनका (ओछा), पंख (अनथक), नभ (शून्य), ज्वाल (उर्ध्वंग), हरकारा (दुर्निवार), ध्वजदंड (दृढ़), पथ (सूने), दिन (नूतन)

9. (क) जिंदगी, प्राण; (ख) सुबह, सवेरा; (ग) गगन, आकाश; (घ) दिवस, वार

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 फूल का मूल्य

खण्ड-अ

1. (क) शीतकाल।

(ख) उसने सोचा, 'राजा जी को आज पुष्प प्रदान करूँगा। पुष्पों के प्रेमी राजा जी आज अकाल में खिले इस कमल के फूल को पाकर मुँहमाँगा मूल्य प्रदान करेंगे।'

(ग) कमल का फूल।

(घ) राजमहल में।

2. (क) ii, (ख) i, (ग) iii

3. (क) प्रचंड, पुष्प; (ख) आनंद; (ग) वाह्य प्रांतर; (घ) विषण्ण; (ङ) विस्मय-भरे नयनों; (च) उज्ज्वल ललाट, प्रभा

4. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✗; (घ) ✓; (ङ) ✓; (च) ✗

5. (क) सुदास ने राजपथ के पुरुष से; (ख) राजा ने खुद से; (ग) सुदास ने राजा से; (घ) सुदास ने राजा से; (ङ) भगवान बुद्ध ने सुदास से

6.

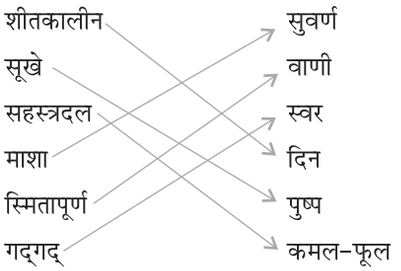

7. (क) राजा जी को माथा नवाकर वह सज्जन बोल उठा, ''सुदास, मेरे बीस माशे।'' राजा जी का चेहरा कुछ उतर गया। उनका हृदय कुछ विषण्ण हो गया। इतने में वह सज्जन बोला, ''महाराजा आप और मैं आज भगवान बुद्‌ध के दर्शन के लिए निकले हैं, इस पुष्प के लिए आज आप और मैं राजा और प्रजा के रूप में नहीं खड़े हैं, बल्कि दो भक्तों के रूप में उपस्थित हैं। बुरा न मानिएगा राजन, आज हम भक्ति के प्रवाह में दुनियादारी की मर्यादा नहीं मानना चाहते।''

स्मितपूर्ण वाणी में राजा ने कहा, ''हे भक्तजन! मैं राजी हूँ, प्रसन्नतापूर्वक माँग प्रस्तुत करो, तुमने बीस माशे कहा है, तो मेरे चालीस।''

(ख) राजा जी ने पूछा, ''सुदास फूल का क्या मूल्य लेगा?''

''महाराज फूल तो इन सज्जन ने ले लिया है,'' सुदास ने कहा।

''किस कीमत पर?''

''मैं दस माशा देता हूँ।''

राजा जी को माथा नवाकर वह सज्जन बोल उठा, ''सुदास, मेरे बीस माशे।'' राजा जी का चेहरा कुछ उतर गया। उनका हृदय कुछ विषण्ण हो गया। इतने में वह सज्जन बोला, ''महाराजा आप और मैं आज भगवान बुद्‌ध के दर्शन के लिए निकले हैं, इस पुष्प के लिए आज आप और मैं राजा और प्रजा के रूप में नहीं खड़े हैं, बल्कि दो भक्तों के रूप में उपस्थित हैं। बुरा न मानिएगा राजन्, आज हम भक्ति के प्रवाह में दुनियादारी की मर्यादा नीहं मानना चाहते।''

स्मितपूर्ण वाणी में राजा ने कहा, ''हे भक्तजन! मैं राजी हूँ, प्रसन्नतापूर्वक माँग प्रस्तुत करो, तुमने बीस माशे कहा है, तो मेरे चालीस।''

''तो मेरे...।''

भक्त इतना बोलने को ही था कि सुदास बोल उठा, ''क्षमा कीजिए राजन्, क्षमा करो, हे भक्तजन! मुझे यह कमल-फूल बेचना नहीं है।''

(ग) वट-वृक्ष की छाया में पद्‌मासन लगाकर भगवान बुद्‌ध विराजमान थे। उज्ज्वल ललाट, मुख पर आनंद की प्रभा, ओंठों से सुधा झर रही थी और नयनों से अमृत टपक रहा था। मेघों-सी धीर-गंभीर ध्वनि इस तपस्वी के मुख से निकल रही थी। सुदास स्तब्ध होकर खड़ा रहा।

(घ) भूमि पर झुककर सुदास ने इस परम तपस्वी के चरणों के आगे कमल-फूल चढ़ा दिया। वट-वृक्ष के सघन शाखाओं में से पंछी बोल उठे। पवन की लहर आई। कमल की पंखुड़ियाँ हिल-मिलकर मानो हँस उठी हों। सुदास के शकुन सफल हो गए।

(ङ) एकाकी खड़ा हुआ वह विचारों में विलीन हुआ जा रहा था, 'जिस भगवान बुद्‌ध के लिए ये भक्त लोग इतना द्रव्य खर्च करने को तैयार हैं, वह पुरुष स्वयं कितना धनवान होगा? कितना महामना होगा? उसी के चरणों में यह पुष्प अर्पित कर दूँ तो मुझे न जाने कितना द्रव्य मिलेगा?'

(च) वट-वृक्ष की छाया में पद्‌मासन लगाकर भगवान बुद्‌ध विराजमान थे। उज्ज्वल ललाट, मुख पर आनंद की प्रभा, ओंठों से सुधा झर रही थी और नयनों से अमृत टपक रहा था। मेघों-सी धीर-गंभीर ध्वनि इस तपस्वी के मुख से निकल रही थी।

(छ) स्वयं कीजिए।

8. (क) मुझे शीतकाल का समय बहुत पसंद है।

(ख) गुलाब का फूल बहुत सुंदर होता है।

(ग) कोयल ने गाना गाया।

(घ) भगवान शिव ने भक्त को दर्शन दिए।

(ङ) राजा ने दरबारी को महल में बुलाया।

(च) मीरा ने बहुत भक्ति की थी।

(छ) माली ने पौधों में पानी डाला।

9. उष्ण, काँटा, खरीदना, निराशा, इधर, रंक, शोक, अमूल्य, दुर्जन

10. (क) सुमन, कुसुम, पुष्प; (ख) कीमत, दाम, मान; (ग) नृप, नरेश, भूप; (घ) जलाशय, तालाब, ताल; (ङ) परमात्मा, प्रभु, ईश्वर

11. मईया, भईया; सहारा, लकड़हारा; सब्जीवाला, कबाड़ीवाला; माइक, इकट्‌ठा

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 गुरु नानकदेव (जीवनी)

खण्ड-अ

1. (क) पाकिस्तान में लाहौर में कोई बीस किलोमीटर दूर रावी नदी के दाएँ किनारे एक गाँव है—तलवंडी, जो अब ननकाना साहब के नाम से प्रसिद्‌ध है।

(ख) नानक को काजी के पास पढ़ने बैठा दिया गया।

(ग) नानक ने उनसे 'ओंकार' शब्द का अर्थ पूछा।

2. (क) iii, (ख) iii

3. (क) शांत, गंभीर; (ख) ज्योतिषियों; (ग) काजी; (घ) वैराग्य

4. (क) पाकिस्तान में लाहौर में कोई बीस किलोमीटर दूर रावी नदी के दाएँ किनारे एक गाँव है—तलवंडी, जो अब ननकाना साहब के नाम से प्रसिद्‌ध है। इसी गाँव में संवत् 1526 विक्रमी के कार्तिक मास की पूर्णिमा को कालूचंद बेदी के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। प्राय: बालक पैदा होते ही हँस पड़ा। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। ज्योतिषियों ने नक्षत्र-गणना करके भविष्यवाणी की कि यह बालक बड़ा प्रतापी होगा।

(ख) उन्होंने पंडित जी से कहा, ''महाराज! मुझे सूत का कच्चा यज्ञोपवीत नहीं चाहिए। मुझे तो ऐसा यज्ञोपवीत चाहिए जिसमें सत्य, दया और संतोष के धागे हों और संयम की गाँठ हो।''

(ग) नानक ने तीन बार सारे भारत का भ्रमण किया और लोगों को सत्य का स्वरूप समझाया। उनके साथ उनके दो शिष्य-भाई बाला और भाई मर्दाना रहते थे। वे अपने गुरु के बनाए पदों को गा-गाकर लोगों को सुनाते थे।

(घ) नानक के उपदेशों से प्रभावित होकर लाखों लोग उनके शिष्य हो गए। कालांतर में ये सिख कहलाए। सिख शब्द का बिगड़ा रूप है। जो लोग मूर्ति-पूजा और धर्म के नाम पर किए जाने वाले व्यर्थ के आडंबरों में फँस गए थे, उन्हें सच्चे मार्ग के दर्शन हुए। जो लोग छोटी जाति में जन्म लेने के कारण नीची निगाह से देखे जाते थे, उन्हें गुरु नानक के उपदेशों से बड़ी शांति मिली।

5. लाहौर, पूर्णिमा, आश्चर्य, तृप्ता, ज्ञान, प्रसिद्ध, प्रतिशत, नम्रता, परमात्मा

6. ज्ञानी, प्रतापी, हरा, गुलाबी, मीठी, वरद

7. बायाँ, छोटा, बाद में, प्रश्न, कम, अशांत, नीच, अमीर, झूठा

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 कुबेर का घर

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii, (घ) ii, (ङ) i

3. (क) माँग, अनसुनी, (ख) गाँव, बुढ़िया, (ग) नाक, नथनी, (घ) बुढ़िया, नन्हा, (ङ) विचित्र, अचंभित, (च) दंपती, आशीर्वाद, (छ) मूर्ख, माणिक्य

4. (क) साधु ने घर की रानी से कहा
(ख) स्त्रियों बुढ़िया ने साधु से कहा
(ग) बुढ़िया ने साधु से कहा
(घ) किसान ने साधु से कहा
(ङ) साधु ने किसान से कहा

5. (क) साधु विचित्र स्वभाव का था। वह बोलता कम था। उसके बोलने का ढंग भी अजब था।
(ख) उसकी बात सुनकर सब लोग हँसते थे। कोई चिढ़ जाता था तो कोई उसकी माँग सुनी-अनसुनी कर अपने काम में जुट जाता था।
(ग) साधु की विचित्र माँग सुनकर स्त्रियाँ चकित हो उठती थी। वे कहती थी, ''बाबा! यहाँ तो पेट के लाले पड़े हैं। तुम्हें इतने ढेर सारे मोती कहाँ से दे सकेंगे।''
(घ) साधु को खाली हाथ जाता देखकर बुढ़िया ने साधु को पास बुलाया। उसकी हथेली पर एक नन्हा-सा मोती रखकर वह बोली साधु महाराज नाक की नथनी टूटी तो यह मोती मिला आप इसे ले लो।
(ङ) मोती माँगने की चाह साधु को गाँव से बहुत दूर एक किसान तक ले गई।
(च) किसान ने साधु के लिए ओसारे में चादर बिछाई और विराजमान होने के लिए कहा और साधु को प्रणाम किया।
(छ) किसान ने अपनी पत्नी लक्ष्मी से कहा कि साधु बहुत भूखे हैं। इनके भोजन की व्यवस्था करना अंजुलि भर मोती लेकर पीसना और उसकी रोटियाँ बनाना तब तक मैं मोतियों की गागर लेकर आता हूँ।

6.

(क)	साधु	संन्यासी	मुनि
(ख)	नेत्र	नयन	लोचन
(ग)	गृह	भवन	सदन
(घ)	नारी	महिला	औरत
(ङ)	हस्त	कर	पाणि
(च)	कृषक	खेतीहर	हलधर

7. (क) स्वभाव (ख) अनसुनी
(ग) कल्याण (घ) अचंभित
(ङ) विराजमान (च) व्यवस्था

8. (क) साधु की विचित्र माँग पूरी होने तक वह भूखा-प्यासा ही रहा।
(ख) गीता स्वभाव से ही नटखट है।
(ग) राजमहल में अनेक दास-दासियाँ थी।
(घ) साधु को अंजलि भी गेहूँ के दाने दे दो।
(ङ) सीप के अंदर मोती मिलता है।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 नेताजी सुभाषचंद्र बोस

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) ii

3. (क) विरुद्ध, पृथक्, (ख) भारतवासी, कुर्बान, (ग) अहिंसापूर्ण, (घ) क्रांतिकारी, सरकार, (ङ) नौकर, बाहर

4.

गांधी जी	आजाद हिंद फौज
जानकीनाथ	अहिंसावादी
कोलकाता	जापान की हार के कारण
सुभाषचंद्र बोस	प्रेसीडेंसी कॉलेज
आत्मसमर्पण	प्रसिद्ध वकील

5. (क) वे अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करके देश को स्वतंत्र कराना चाहते थे।
(ख) देशवासियों से उनका आहवान था– '' तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूगाँ।''
(ग) नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को ओडिशा प्रांत के कटक नामक नगर में हुआ था।
(घ) उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में हुई थी। कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके बाद कलकत्ता के ही स्कॉटिश कॉलेज से बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे आई०सी०एस० की परीक्षा देने के लिए इंग्लैंड गए। परीक्षा में उत्तीर्ण होकर स्वदेश लौटे।
(ङ) गाँधी जी के नेतृत्व में देश में असहयोग आंदोलन चलाए जाने पर अनेक प्रबुद्ध लोग अपना कार्य छोड़कर भाग ले रहे थे। ऐसे अवसर पर सुभाष सरकारी नौकरी को ठोकर मार आंदोलन में जुट गए।
(च) उन्होंने 'नमक कानून तोड़ो' आंदोलन का नेतृत्व किया। वे कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर चुने गए।
(छ) उनके विचार क्रांतिकारी थे। वे कांग्रेस के अहिंसापूर्ण आंदोलन में विश्वास नहीं रखते थे और उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।
(ज) नेताजी ने देश में हिंदू-मूस्लिम एकता के लिए फॉरवर्ड ब्लाक की स्थापना की।
(झ) सुभाषचंद्र बोस का पहले से ही तयशुदा कार्यक्रम था कि योजनाबद्ध तरीके से भारत छोड़कर अन्य देशों में जाएँगे और वहाँ अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने की योजना बनाएँगे। इसी बीच उन्होंने उन लोगों को सूचना भेज दी, जिन्हें इनके जाने का सारा प्रबंध करना था। तारीख इत्यादि का सब निर्णय हो गया। इतने दिनों तक इन्होंने अपनी दाढ़ी भी नहीं कटवाई थी। इस प्रकार दाढ़ी बढ़ जाने पर वे जल्दी पहचाने नहीं जाते थे। एक दिन मौलवी के वेश में वे घर से बाहर निकले। कोई भी इन्हें पहचान नहीं सका। वे एक मोअर में बैठकर कलकत्ता से चालीस मली दूर एक रेलवे स्टेशन

पर पहुँचे और पेशावर तक दूसरे दर्जे का टिकट लेकर गाड़ी में बैठ गए। फौजी सरदार के पूछने पर उन्होंने अपना नाम लखनऊ निवासी जियाउद्दीन बताया। अनेक कष्टों को सहते हुए 26 जनवरी, 1942 को सुभाषचंद्र बोस पुलिस व जासूसों को चकमा देकर काबुल के रास्ते जर्मनी पहुँचे।

(ञ) एक विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु का दु:खद समाचार देश को प्राप्त हुआ दुर्घटना में नेताजी का शव या कोई चिह्न न मिल पाने के कारण उनकी मृत्यु पर आज तक संदेह बना हुआ है।

6. (क) कायर (ख) परदेश
(ग) अस्वतंत्र (घ) गुमनाम
(ङ) अनुत्तीर्ण (च) निम्न

7. (क) आजादी (ख) युद्ध
(ग) बलिदान (घ) आराम

8. (क) देश की स्वतंत्रता में गांधी जी का बहुत योगदान है।
(ख) आन की रक्षा के लिए हमें देश पर कुर्बान होना चाहिए।
(ग) राजा मानसिंह के नेतृत्व में पानीपत कादूसरा युद्ध लड़ा गया।
(घ) सरिता ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 रक्त और हमारा शरीर

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) i, (घ) ii

3. (क) मिली लीटर, चालीस, (ख) शरीर, (ग) शौचालय, (घ) कोशिश, सामना, (ङ) अट्ठारह, स्वस्थ

4.

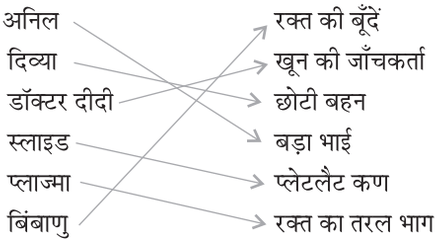

5. (क) डॉक्टर ने अनिल से कहा
(ख) डॉक्टर दीदी ने अनिल से कहा
(ग) डॉक्टर दीदी ने अनिल से कहा
(घ) अनिल ने डॉक्टर दीदी से कहा

6. (क) दिव्या को कुछ दिनों से थकान महसूस होती रहती है। मन किसी काम में नही लगता, भूख पहले से कम लगती है।
(ख) अस्पताल में अनिल को अपनी डॉक्टर दीदी दिखाई दी।
(ग) डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी-सी शीशी में डाल दी और स्लाइड पर लगा दीं और अनिल से कहा कि तुम कल अस्पताल से रिपोर्ट ले जाना।
(घ) दिव्या को एनीमिया हुआ था। यदि कोई व्यक्ति आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। जिसके कारण रक्त-कण नहीं बन पाते हैं। रक्त में इनकी कमी हो जाती है। लाल कणों की इसी कमी के कारण एनीमिया हो जाता है।
(ङ) लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं। गोल और दोनों तरफ से अवतल यानी बीच में दबे हुए रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों होती हैं। ये कण शरीर के लिए दिन रात काम करते हैं।
(च) पेट में कीड़ों के होने का मुख्य कारण दूषित जल और खाद्य पदार्थों का शरीर में प्रवेश करना है। इनसे बचने के लिए आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो ले और साफ पानी ही पिये।
(छ) ब्लड बैंकों में रक्त का भंडार सुरक्षित रहे इसके लिए समय-समय पर रक्तदान करना आवश्यक है। अट्ठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं।

7. (क) सूख (ख) किस्सा
(ग) भक्त (घ) भंग
(ङ) जून (च) राग
(छ) आँच (ज) सच्चा

8. (क) खाता-पिता क्रय-विक्रय
(ख) अपना-पराया आगा-पिछा
(ग) ऊँच-नीच ऊँचा-नीचा
(घ) काम-धाम कूद-फाँद

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 गिल्लू

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) i

3. (क) भिगोकर, नन्हें, (ख) लगातार, उपरांत, (ग) डलिया, बिछाकर, (घ) समझदारी, क्रियाकलाप, (ङ) झाँकते, मुक्त

4.

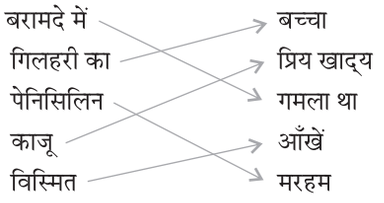

5. (क) लेखिका उसको हौले से उठाकर कमरे में ले गई फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेनिसिलिन का मरहम लगाया फिर रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर उसके नन्हें से मुँह में डालने का प्रयास किया।
(ख) भूख लगने पर गिल्लू 'चिक्-चिक्' करने लगता था।
(ग) तीन-चार मास के बाद गिल्लू के स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगी।
(घ) लेखिका को मोटर दुर्घटना से आहत होकर अस्पताल जाना पड़ा।
(ङ) गिल्लू को काजू सबसे ज्यादा पसंद था।
(च) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती।
(छ) गिल्लू ने अंतिम समय में दिन भर कुछ नहीं खाया न बाहर गया। रात में, अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतर कर लेखिका के बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से उसकी उँगली पकड़कर चिपक गया।
(ज) प्रस्तुत पाठ में हमें महादेवी वर्मा का जीवों के प्रति दया और प्रेम भरे स्वभाव का पता चलता है।

6. (क) कौए छुआ-छुऔवल खेल रहे थे।
(ख) चोट से रक्त निकल रहा था।
(ग) वैद्य जी ने मोहन का सफल उपचार किया।
(घ) गिलहरी की आँखे चमकीली थी।
(ङ) मुसीबत के समय समझदारी से काम लेना चाहिए।
(च) फूलदान में ताजे फूल लगा दिए हैं।
(छ) तीर लगने से हंस मरणासन्न अवस्था में पहुँच गया।
(ज) अस्पताल में बहुत-से डॉक्टर होते हैं।

7.

(क)	सदन	भवन	निकेतन
(ख)	पुष्प	प्रसून	सुमन
(ग)	खग	चिड़िया	विहग
(घ)	काया	तन	देह
(ङ)	रात्रि	निशा	रजनी
(च)	नयन	नेत्र	लोचन
(छ)	दिवस	वास	दिवा

8. (क) कमरे (ख) खिड़कियाँ
(ग) गमले (घ) झूले
(ङ) कौएँ (च) पक्षियों
(छ) गिलहरियाँ (ज) बिल्लियाँ

खंड-ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 यात्री की डायरी

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) ii

3. (क) इन पंक्तियों में लेखक का आशय है कि ऊँट-दौड़ में दौड़ रहे ऊँट-सवार पलभर में ही रेत के समुद्र में तेजी से दौड़ने के कारण ओझल हो गए।
(ख) पर्व और त्योहार मानव जीवन में सरसता का संचार करते हैं। वे मन में नयी उमंग व जोश को प्रेरित करते हैं और हमारे जीवन को विभिन्न प्रकार के रंगों से ओत-प्रोत करते हैं।
(ग) हमारा जीवन विभिन्न प्रकार के रसों से ओत-प्रोत हैं। ये पर्व और त्योहार इन्हीं रंगों को हमारे जीवन में बिखरते हैं।
(घ) समय में आए बदलाव के साथ-साथ पर्व मनाने का ढंग भी बदल गया है।

4. (क) अनुभव, (ख) हरे, (ग) दावतें, (घ) मेलों, (ङ) मिलते-जुलते

5. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✗

6. (क) यात्री ने सऊदी अरब, भारत और आयरलैंड की यात्रा की
(ख) बेल्जियम का मार्दी उत्सव पैट्रिक की याद में मनाया गया।
(ग) मुंबा मेले में जल-खेल और नौका-सजना देखने लायक होती हैं। वहाँ तरह-तरह की नाटक प्रतियोगिताएँ व हस्त-शिल्प मेलों का आयोजन किया जाता हैं कहा जाता है कि ये मेले ही मुंबा की विशेषता है।
(घ) मार्दी ग्रास उत्सव इटली और ब्राजील में भी मनाया जाने लगा।
(ङ) अरब देशों में ऊँट-दौड़ दस से बीस किलोमीटर की दूरी की होती है और हजारों की संख्या में लोग इसे देखने आते हैं। तेज गरमी और उड़ती धूल के बीच भी दर्शकों का उल्लास देखते ही बनता है।
(च) मार्दी ग्रास उत्सव पर पेरिस की गलियों में बैलों की सवारी निकाली जाती थी तथा पीछे-पीछे लोग नाचते-गाते आते थे।
(छ) मानव जीवन में पर्वों का विशेष महत्त्व है। ये मानव-मन में जोश एवं उमंग का संचार कर देते हैं और जीवन के कैनवस पर रंगों की मधुरिमा छिटका देते हैं।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।
9. स्वयं कीजिए। **10.** स्वयं कीजिए।
11. स्वयं कीजिए। **12.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 बिशन की दिलेरी

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) iii, (घ) i, (ङ) ii

3. (क) पगडंडी, आवाज, (ख) एकाएक, समझ, (ग) शिकारियों, (घ) वह, (ङ) स्वेटर, बिशन, (च) मुर्गियाँ, बरामदा

4. (क) बिशन ने स्वयं से कहा
(ख) शिकारी ने बिशन से कहा
(ग) शिकारी ने बिशन से कहा
(घ) कर्नल ने शिकारी से कहा
(ङ) शिकारी ने कर्नल से कहा

5. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓

6. (क) बिशन प्रतिदिन कर्नल दत्ता के फार्म हाउस जाता है। बाग में कीट-नाशक दवा के छिड़काव का काम चल रहा था।
(ख) गोलियों का शोर गूँजने के कारण पक्षी घबरा गए। आसमान में गोल-गोल चक्कर काटने लगे। बिशन सहम कर पेड़ों की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया।
(ग) फसलें पकने पर ढेरों तीतर आ जाते हैं इसलिए शिकारी उनका शिकार करने के लिए गोली चलाते हैं।
(घ) बिशन को गेहूँ के खेत में एक घायल तीतर मिला।
(ङ) बिशन खेतों के साथ-साथ छिपकर इसलिए चलने लगा ताकि शिकारी उसे देख न लें।
(च) बिशन आहट सुनकर दौड़ पड़ा दौड़ते-दौड़ते उसने आधी पहाड़ी पार कर ली।
(छ) बिशन ने तीतर को शेड के नीचे पड़े कबाड़ में टोकरी के अंदर रखकर उसे स्वेअर से ढक कर छुपा दिया।
(ज) कर्नल साहब का कुत्ता किसी अजनबी को देखकर ही भौंकने लगता था इसलिए वह शिकारियों को देखते ही भौंकने लगा।

7. (क) खेतों में कीटनाशक दवाई का छिड़काव करवा दिया है।
(ख) यह पगडंडी घर की तरफ जाती है।
(ग) राजदरबार में युधिष्ठिर को अपमानित होता देखकर सब चुपचाप थे।
(घ) एकाएक आकाश में बिजली चमकी।
(ङ) दशरथ के तीर से श्रवण कुमार घायल हो गए।

8. (क) आगे (ख) शाम
(ग) अंत (घ) पास

(ङ) भारी (च) कच्ची
(छ) अगला (ज) सरल

9. (क) धेनुएँ (ख) पत्नियाँ
(ग) सेवकों (घ) गोलियाँ
(ङ) विधियाँ (च) शिकारियों
(छ) लताएँ (ज) कुत्ते

खण्ड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 बात पते की

खंड-अ

2. (क) i, (ख) ii, (ग) i, (घ) ii

3. (क) अम्मा, अम्मा बताना, 'क्या सच है जो कहती दादी,
बिना हथियार उठाए सचमुच क्या बापू ने दी आजादी?
अम्मा बोलो, गांधी जी ने, कैसे चमत्कार दिखलाया,
बिना लड़े ही ताकतवर दुश्मन को कैसे मार भगाया?

(ख) देश बड़ा है, सब कुछ छोटा, बापू ने सबको बतलाया,
आजादी अधिकार हमारा, यह सच जन-जन को समझाया।
सोया देश उठा जब मुन्ना! अंग्रेजी सत्ता थर्राई,
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम से 'स्वराज' की आँधी आई!

4. (क) गांधी जी ने देश को आजादी बिना हथियार उठाए दिलाई। उन्होंने सत्य-अहिंसा और प्रेम से आजादी की लड़ाई लड़ी।
(ख) गांधी जी ने हथियार का सहारा नहीं लिया था क्योंकि वे अहिंसा के पुजारी थे।
(ग) गाँव-गाँव जाकर बापू ने आजादी की अलख जगाया।
(घ) समाज के निम्न वर्ग के साथ समाजिक स्थलों पर भेद-भाव किया जाना ही छूआ-छूत कहलाता है। गांधी जी ने छूआ-छूत के खिलाफ आवाज उठाई।
(ङ) गांधी जी ने काला सूत चलाकर चरखा घर-घर में खादी पहुँचा दी।

5. (क) बापू ने बिना हथियार उठाए देश को आजादी दिलाई।
(ख) गंगाजल में अनेक चमत्कारिक शक्तियाँ होती है।
(ग) गांधीजी ने छुआछूत का विरोध किया।
(घ) गांधी जी ने खादी पहनने पर जोर दिया।
(ङ) दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 नमक का दारोगा

खंड-अ

2. (क) i, (ख) ii, (ग) ii, (घ) iii

3. (क) ऊपरी, ठिकाना, (ख) अलोपीदीन, प्रतिष्ठित, (ग) गड़गड़ाहट, मल्लाहों, (घ) घबराकर, (ङ) निरादर, (च) हथकड़ियाँ, (छ) माला

4.
व्यापारी	ऋण के बोझ से।
दुर्दशा	अच्छा व्यवहार।
उत्तम आचरण	वस्तु का व्यापार।
नमकहरामी	धर्म पर अपना सब कुछ कुर्बान करना।
धर्मपरायण	बेईमानी करना।

5. (क) दरोगा साहब ने गाड़ी वालों से पूछा
(ख) गाड़ीवालों ने अलोपीदीन से कहा
(ग) अलोपीदीन ने दरोगा से कहा
(घ) वंशीधर ने अलोपीदीन से कहा
(ङ) बूढ़े पिताजी ने वंशीधर से कहा
(च) वंशीधर ने अलोपीदीन से कहा

6. (क) लोग चोरी-छिपे नमक का व्यापार करने लगे क्योंकि जब से नमक का नया विभाग बना और ईश्वर प्रदत्त वस्तु का व्यापार करने का निषेध हो गया था।
(ख) मुंशी वंशीधर के पिता उन्हें समझाने लगे कि बेटा घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं इसलिए ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो।
(ग) वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे।
(घ) वंशीधर नमक विभाग के दरोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। वेतन अच्छा था ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था इसलिए मुंशी जी फूले नहीं समा रहे थे।
(ङ) अलोपीदीन ने वात्सल्य पूर्ण स्वर में कहा कि कुल तिलक और पुरखों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सबकुछ अर्पण कर सकें।
(च) अलोपीदीन ने वंशीधर को मैनेजरी का पद सँभालने के लिए हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो वंशीधर की आँखें डबडबा गई।
(छ) पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर के हाथ में कलम देकर कहा कि न मुझे विद्वत्ता की चाह है न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य से सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है यह कलम लीजिए; अधिक सोच विचार न कीजिए, दस्तखत कीजिए।

7. (क) बेटे (ख) पंडितों
(ग) वृक्षों (घ) शब्दों
(ङ) गुलामों (च) आँखें

8. (क) पुराना (ख) अयोग्य
(ग) एक (घ) युग
(ङ) सरल (च) कड़वा

9. (क) सर्वसम्मानित (ख) विद्वान
(ग) कार्यकुशलता (घ) निर्मूल
(ङ) यथार्थ (च) हथकड़ियाँ

10. (क) दुर्योधन ने पांडवों के साथ पक्षपात पूर्व व्यवहार किया।
(ख) बुढ़े मुंशी पहले से ही कुड़ बुड़ा रहे थे।
(ग) पुत्र के मामले में सेठ बहुत अभागा था।
(घ) राम-सीता के विवाह के सुअवसर पर सभी ऋषी-मुनि एकत्रित हुए।
(ङ) रजत के रिर्पोट कार्ड पर पिताजी ने हस्ताक्षर कर दिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 भारत कोकिला : एक और पहलू

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) iii, (घ) i, (ङ) ii

3. (क) जूझना, (ख) परिकल्पना, (ग) विनोद प्रियता, आवरण, (घ) गोखले, (ङ) उतावली, (च) विद्रोहिणी

4.

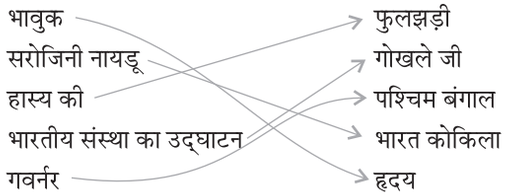

5. (क) रास्ते, (ख) कवयित्री, (ग) पूरा, (घ) न, (ङ) बेटी

6. (क) सरोजिनी नायडू के भाषण से छलकता काव्य-रस श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देता था।

(ख) अपने विनोदी स्वभाव के कारण वे अपनी मित्र-मंडली की विदूषक कही जाने लगी।

(ग) जिंदगी उनकी सहेली थी। वह जिस रूप में सामने आए उन्हें अच्छी लगती थी। यही कारण था कि जेल में रहते हुए भी वे कभी दु:खी नहीं रही।

(घ) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब उन्हें पश्चिम बंगाल का गर्वनर बनाया गया तो वे हास्य की फुलझड़ी छोड़ने से बाज नहीं आई।

(ङ) गाँधी जी के गुणों और व्यक्तित्व से सरोजिनी कुछ ऐसी अभिभूत थी कि उनके सामने भीगी बिल्ली बन जाती थी।

(च) सन् 1913 में सरोजिनी नायडू लंदन में थी। वे लंदन में हो रही घटनाएँ जानने के लिए उतावली थी।

(छ) गोपाल कृष्ण गोखले जी बीमार चल रहे थे। डॉक्टर ने उन्हें किसी प्रकार का श्रम करने के लिए मना कर दिया था।

(ज) सरोजिनी ने गोखले से लंदन चलने को कहा क्योंकि लंदन में बनी संस्था का उद्घाटन करवाना चाहती थीं।

(झ) सरोजिनी ऐसे क्षण की प्रतीक्षा में थी कि गोखले जी उनसे उस अधिकार के बारे में पूछे जिसके कारण उन्होंने गोखले जी की ओर से निर्णय ले लिया था।

(ञ) 2 अगस्त, 1913 को लंदन के कैक्स्टन हॉल में गोखले जी ने भारतीय संस्था का उद्घाटन किया और सरोजिनी का वचन पूरा किया।

7. (क) निराकार (ख) अस्पष्ट
(ग) सरल (घ) मंद
(ङ) असंभव (च) अवगुण
(छ) झूठा (ज) निराशा

8. (क) होली के त्योहार पर शत्रु भी प्यार के रंग में उँग जाते हैं।
(ख) दीपक अपनी माँ का आँखों का तारा है।
(ग) बंदर को सामने देख कर रजत भीगी बिल्ली बर गया।
(घ) रात अक्सर अपने मित्र के लिए चाँद चूरा लाने तक की बात करता है।
(ङ) पुलिस को देखते ही चोर उड़न-छू हो गया।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 हृदय-परिवर्तन

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii, (घ) ii

3. (क) आनंद, (ख) तितली, उँगलियों, (ग) गुलेल, अचूक, (घ) शहतीर, मटरगश्ती, (ङ) कंकड, टीन, (च) टकटकी, ओर, (छ) दरवाजा, झरोखा

4.

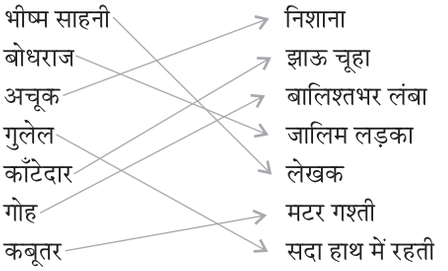

5. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✗, (च) ✗

6. (क) बोधराज एक जालिम लड़का था। वह दूसरों के साथ सदैव कष्ट पहुँचाने वाला व्यवहार करता था।

(ख) चोर दीवार फाँदने के लिए गोह का इस्तेमाल करते हैं। वे गोह की एक टाँग में रस्सी बाँध देते हैं। फिर जिसे दीवार को फादना हो,रस्सी झुलाकर दीवार के ऊपर की ओर फेंकते हैं। दीवार के साथ लगते ही गोह अपने पंजों से दीवार को पकड़ लेती है फिर रस्सी को दस आदमी भी खींचे तो गोह दीवार को नहीं छोड़ती। चोर उसी रस्सी के सहारे दीवार फाँद जाते हैं।

(ग) दूध पिलाने से गोह के पंजे ढीले पड़ जाते हैं।

(घ) घोंसले से चीं-चीं की आवाज आ रही थी और मैना के बच्चे पंख फड़-फड़ाकर चिल्ला रहे थे। अब चील क्या करेगी यह देखने के लिए लेखक और बोधराज निश्चेष्ट से खड़े हो गए।

(ङ) कबूतर शहतीर पर गुटरगूँ-गुटरगूँ करते हुए मटरगश्ती कर रहे थे।

(च) घोंसले में मैना के बच्चे थे उनकी पीली-पीली नन्हीं चोंचे थी।

(छ) लेखक और बोधराज ने मैना के बच्चों की रक्षा चील से की। उन लोगों ने मेना के बच्चों को घोसलें सहित गैराज में रख दिया।

(ज) बोधराज चील द्वारा मैना के बच्चों को नुकसान पहुँचाने के ख्याल से ही डर गया और इस घटना ने उसके हृदय पर गहरा प्रभाव छोड़ा और उसका हृदय परिवर्तन हो गा। उसने अभी जीव-जंतुओं को सताना छोड़ दिया। पहले उसके पास हमेशा ही गुलेल-कंकड रहते थे परन्तु अब उसकी जेबों में बहुत-सा चुग्गा भरा रहता था और वह देर तक पक्षियों के करतब देखता रहता था।

7. (क) राम और श्याम सहपाठी हैं।
(ख) ठंड के मौसम में पानी बर्फ में परिवर्तित हो जाता है।
(ग) मधुमक्खी ने रमेश को डंक मार दिया।
(घ) रोशनदान से ठंडी हवा आ रही थी।
(ङ) चील ने झपट्टा मार कर साँप को पकड़ लिया।

8. (क) बुढ़ापा (ख) छोटा
(ग) सरल (घ) नया
(ङ) सचेष्ट (छ) पुण्य
(छ) बेचैन (ज) असंतुलन

9. (क) मृदुभाषी, (ख) अनुत्साहित, (ग) कृतघ्न, (घ) निराधार, (ङ) अल्पायु, (च) अद्वितीय

खंड (ब) स्वयं कीजिए।

पाठ-14 रावण की दौड़

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) i, (घ) ii

3. (क) प्रसिद्ध, (ख) आकर्षण, (ग) रावण, सजीव, (घ) सुतली, फुलझड़ियाँ, यह, (ङ) फागुनी, कॉलोनी, (च) आकर्षण, रौबीली

4.

पहला इलाका	चंदन नगर
दूसरी कॉलोनी	जेल रोड
तीसरी कॉलोनी	विजय नगर
चौथी कॉलोनी	परदेशीपुरा
पाँचवाँ इलाका	तिलक नगर

5. (क) रावण ने शिशिर से पूछा
(ख) शिशिर ने रावण से कहा
(ग) रावण ने मुनीश से कहा
(घ) मुनीश ने रावण से कहा
(ङ) फागुनी ने रावण से कहा
(च) दिव्यांश ने रावण से कहा

6. (क) इस बार रावण ने कुछ अलग करने का निश्चय किया वह अपने दहन का एक ही तरीका अपनाते वह ऊब चुका था।
(ख) रावण शहर की प्रसिद्ध इमारत की छत पर उतरा। उतरकर उसने सामने की होटल से एक गिलास चाय सुड़की और एक घुमक्कड़ का स्वांग बनाकर निरीक्षण अभियान पर निकल पड़ा।
(ग) शिशिर ने बताया कि मैंने रावण के बाहरी स्वरूप पर बहुत ध्यान दिया है ताकि पहला प्रभाव अच्छा पड़े और इसका स्वास्थ्य गोल मटोल नजर आए।
(घ) किशोरवय का शिशिर ने रावण के पुतले को बनाने में छ महीने के अखबार की रद्दी और अपने कई पुराने कपड़ों को ठूँस-ठूँसकर भरा है। इसमें लगभग पाँच सौ रुपये खर्च हुए।
(ङ) विजय नगर पहुँचकर रावण वहाँ के पुतले को देखकर हक्का बक्का रह गया क्योंकि तेरह फुट का रावण ऐसा सजीव लग रहा था जैसे अभी बोल पड़ेगा मुनेश ने अपने द्वारा बनाए गए पुतले की विशेषता बताई कि इस बार मैंने आतिश बाजी पर ज्यादा ध्यान दिया है, प्रत्येक अंग में ठूँस-ठूँसकर सुतली बम, अनार और फुलझड़ियाँ भरी है ताकि बहुत देर तक यह जलता रहे।
(च) फागुनी ने अपने भाई के साथ मिलकर इसके दसों सिरों को बनाने में खूब परिश्रम किया। प्रत्येक सिर को नाम दिया है— आतंकवादी, भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, मिलावटी, दहेज-लोभी, मुनाफाखोर, काला बाजारी, संप्रदायवादी, महँगाई, बेईमानी।
(छ) पारस ने बताया कि इसका प्रमुख आर्कषण इसकी बड़ी रौबीली मूँछ और हाथ में तलवार के बजाय मशीनगन है।
(ज) रावण ने बताया कि तुम एक बुरे आदमी को इतना अच्छा और महँगा क्यों बनाते हो। इससे अच्छा तो मुझे जला लो मैं असली रावण हूँ; यह सुनकर पारस का मुँह खुला रह गया।

7. (क) आगरे में हमने ताजमहल का भ्रमण किया।
(ख) आगरे का पेठा बहुत प्रसिद्ध है।
(ग) अज्ञेय की रचनाओं में घूमक्कड़ी का भाव रहता है।
(घ) भालू का बच्चा गोल-मटोल था।
(ङ) चित्रकार ने चित्र में युद्ध का सजीव चित्रण किया है।
(च) अच्छे कार्य की प्रशंसा सभी करते हैं।
(छ) सर्कस में शेर आकर्षण का केंद्र था।

8. (क) निर्णय (ख) अग्नि
(ग) घूमना (घ) बालक
(ङ) पहुँच (च) वस्त्र

9. (क) पीछे (ख) नापसंद
(ग) विकर्षण (घ) निर्जीव
(ङ) आय (च) निंदा
(छ) ईमानदारी (ज) सूरत
(झ) धरती (ञ) साधारण
(ट) बुरा (ठ) सस्ता

10. (क) विकारी (ख) अविकारी
(ग) अविकारी (घ) अविकारी
(ङ) अविकारी (च) विकारी
(छ) अविकारी (ज) अविकारी
(झ) अविकारी (ञ) अविकारी

11.

तत्सम	तद्भव	देशज	विदेशी
दुग्ध	रात	डिबिया	चाकू
दधि	सूरज	थाली	डॉक्टर
रात्रि	हाथ	पेट	साबुन
सूर्य	आग	किताब	फौज

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 मिठाईवाला

खंड-अ

2. (क) ii (ख) iii (ग) i, (घ) iii

3. (क) बच्चे ने खिलौने वाले से कहा
(ख) रोहिणी ने विजय बाबू से कहा
(ग) विजय ने मुरली वाले से कहा
(घ) रोहिणी ने दादी से कहा
(ङ) दादी ने मिठाई वाले से कहा
(च) मिठाई वाले ने रोहिणी से कहा

4. (क) मिठाईवाला अपने बच्चों की खोज में निकला था इसलिए वह अलग-अलग चीजें बेचने आता था। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक सी-मिल जाती है। वह महीनों बाद अलग-अलग रूपों में आता था।
(ख) मिठाईवाला मीठे स्वरों के साथ गलियों में घूमता था। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर सभी खिंचे चले आते थे।
(ग) विजय बाबू ने मुरलीवाले से कहा कि मुरली तो तुम सबको दो-दो पैसे में ही देते होंगे पर तुम मुझ पर ऐसा करके एहसान लाद रहे हो। मुरलीवाला बोला दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों न बेचे पर ग्राहक यही समझता है कि दुकानदार उसे लूट रहा है।
(घ) खिलौनेवाले के आने पर खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता तब वह खिलौनेवाला वही बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता। बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते।
(ङ) मुरलीवाले का गाना सुनकर रोहिणी को खिलौनेवाले का स्मरण हो गया। क्योंकि वह भी खिलौने वाले की तरह गाकर मुरली बेच रहा था।
(च) दादी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। उसने इन व्यवसायों को अपनाने का कारण संतोष, सुख, धीरज की प्राप्ति बताया।

(छ) कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह अपनी व्यक्तिगत कथा सुनाते-सुनाते भावुक हो गया था और उसकी आँखें आँसूओं से तर थी।

(ज) नहीं, आजकल की स्त्रियाँ चिक के पीछे से बात नहीं करती।

5.

	मूल शब्द	प्रत्यय
(क)	पुलक	इत
(ख)	खेल	औना
(ग)	आवश्यक	ता
(घ)	मुरली	वाला
(ङ)	जायका	दार
(च)	मुस्कुराना	आहट

6. (क) बच्चे मेला देखने के लिए बहुत उत्सुक थे।
(ख) डॉक्टर बीमारी के विषय में अभी संशय में है।
(ग) ईश्वर को सदैव से ही अंतरयामी माना जाता हैं।
(घ) हम पर गुरुजी की असीम कृपा है।
(ङ) माँ के हाथ का बना खाना जायकेदार होताहै।
(च) दादी सब्जी वाले से मोलभाव करने लगी।

7. (क) बच्चा सच्चा (ख) सज्जन मंज्जन
(ग) अन्न गन्ना (घ) उत्तम उत्तर
(ङ) चम्मच अम्मा (च) बल्ला लल्ला

8. (क) अनोखा (ख) मूल्य
(ग) मिष्ठान (घ) बगीचा
(ङ) बाँसुरी (च) बालक

9. (क) कड़वे (ख) ऊपर
(ग) महँगे (घ) कठोर
(ङ) मकली (च) बुश

खंड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 चिट्ठी के अक्षर

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) iii, (घ) i

3. (क) चिट्ठियाँ, (ख) अनायास, लिखावट, (ग) अखबार, (घ) बारात, (ङ) मन, (च) शादी, (छ) बचपन, निसान

4.

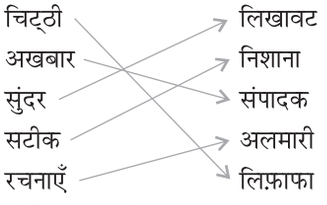

5. (क) चिट्ठी में संपादक के हस्ताक्षर थे। उनका नाम महिपाल सिंह था।
(ख) चिट्ठी की लिखावट देखकर लेखक के मुँह से निकला वाह बड़ी सुंदर लिखावट है।
(ग) लेखक ने अपनी रचनाएँ अखबार में छपवाईं।
(घ) महिपाल सिंह की चिट्ठियाँ समय-समय पर लेखक के पास आती रहती। वे कभी कविता माँगते और कभी कहानी माँगते लेखक बराबर उनकी इच्छाओं की पूर्ति कर दिया करता। इस कारण दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम पैदा हुआ।
(ङ) संपादक महोदय आपने बाएँ हाथ से लिखते थे।
(च) महिपाल सिंह से लेखक ने प्रश्न पूछा कि वे कब से बाएँ हाथ से लिख रहे है। यह सुनकर वह सोच में पड़ गये।
(छ) एक बार महिपाल सिंह मोर्च पर थे तो पास ही में एक बम फटा और उनका दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया और वह गिर पड़े।
(ज) महिपाल सिंह के पढ़ने-लिखने का इंतजाम सरकार ने किया।
(झ) संपादक महोदय ने अलमारी से अपनी लिखी रचनाएँ निकाली।

6. (क) मेरे रिपोंट कार्ड पर पिता जी ने हस्ताक्षर कर दिए हैं।
(ख) बैंकों में कल साप्ताहिक अवकाश है।
(ग) राम का रेस में जीतना एक संयोग था।
(घ) संगीता के बगीचे को देखकर हम आश्चर्य चकित रह गए।
(ङ) मैच का परिणाम हमारे पक्ष में रहा।

7. (क) महा + उत्सव (ख) तिलक + उत्सव
(ग) वसंत + उत्सव (घ) होलिका + उत्सव

8. (क) आरंभ (ख) घृणा
(ग) प्रश्न (घ) भीतरी
(ङ) अस्वस्थ (च) अप्रत्यक्ष
(छ) असुंदर (ज) उधर
(झ) दायाँ (ञ) बाहर

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 दादी माँ

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) iii

3. (क) शक्तिधारी, माथे, (ख) दवाओं, (ग) कुनैन, तिताई, (घ) अनुपस्थिति, विलंब, (ङ) वात्याचक्र

4. (क) लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ बचपन की अनेक बातों की याद आई जब वह सूरज की गर्मी में क्वार के दिनों में झाग भरे जलाशयों में धमाके से कूद रहा था। पर दो दिन में नहा-धोकर बीमार हो गया दादी माँ आई उन्होंने चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली माथे पर लगाई दिन भर चारपाई के पास बैठी रहती, कभी पंखा झलती। कभी दाल-चीनी का लेप करती और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करती।
(ख) दादा जी की मृत्यु के बाद दादी माँ के मना करने पर भी पिताजी ने अतुलसंपत्ति व्यय की वह घर की नहीं थी। इसलिए आर्थिक स्थिति खराब रहने लगी।
(ग) दादी माँ का दयामयी वात्सल्य से पूर्ण स्वभाव सबसे अच्छा है।

5. (क) अनुकूल (ख) भारी
(ग) उष्णता (घ) असाधारण
(ङ) साधारण (च) शाप

6. (क) च् + ई + ट् + इ + य् + ों
(ख) धूँ + उ + ध + ऊ + ल् + ई
(ग) अ् + न् + उ + प् + स् + इ + थ् + अ + त् + इ
(घ) आ + श + ई + व् + आ + र् + द् + अ

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 आराम करो

खण्ड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) ii

3. (क) आराम जिंदगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है
आराम शब्द में 'राम' छिपा जो भव-बंधन को खोता है।
आराम शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।

(ख) मैं यही सोचकर पास अक्ल के, कम ही जाया करता हूँ।
जो बुद्धिमान जन होते हैं, उनसे कतराया करता हूँ।
दीये जलने से पहले ही घर में आ जाया करता हूँ।
जो मिलता है, खा लेता हूँ, चुपके से सो जाया करता हूँ।

4. (क) शरीर से किया जाने वाला श्रम शारीरिक श्रम कहलाता है। मस्तिष्क द्वारा किया जाने वाला श्रम मानसिक श्रम कहलाता है।

(ख) मित्र ने लाला को अक्ल से काम करने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि कुछ कर दिखाकर जग में नाम करने का यह सही समय है और इस वक्त आराम छोड़कर कर्म करना चाहिए।

(ग) कवि ने मित्र की बात का उत्तर दिया कि आराम तो जीवन की कुंजी है। आराम शब्द का ज्ञान तो बहुत कम लोगों को होता है। इसलिए हाथ हिलाने के बजाए आराम करो।

(घ) आराम का नकारात्मक असर तब होता है। यदि बीमार पड़ जाए और आवश्यकता से अधिक खा लें।

5. (क) चक्की (ख) अनुभवी
(ग) निश्चिंत (घ) मूर्तिकार
(ङ) पत्रकार (च) पत्रकार
(छ) कथकर

6.

	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
(क)	आता है।	आ चुका।	आएगा।
(ख)	पढ़ता है।	पढ़ चुका।	पढ़ेगा।
(ग)	होना है।	होना था।	होएगा।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 अनोखा पुरस्कार

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) i, (ङ) i

3. (क) अँधेरा, (ख) दिशाएँ, आतंक, (ग) सच्चे, डर, (घ) रात, दूर, (ङ) लापरवाही, (च) पदवी, प्रसन्नता

4. (क) राजा ने स्वयं से कहा
(ख) राजा ने स्वयं से कहा
(ग) वनरक्षक ने राजा से कहा
(घ) सरदार ने राजा से कहा

5.

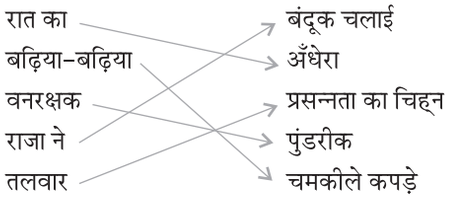

6. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓

7. (क) राजा जंगल से बाहर निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा था।

(ख) राजा आश्चर्य में था अँधेरा बढ़ता जा रहा है वह उसकी परवाह नहीं कर रहा है। वह भी एक मामूली आदमी की तरह भटक सकता है। इसलिए उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी कि वह किधर जाए।

(ग) सच्चे आदमी को किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में डर नहीं लगता है।

(घ) राजा पुंडरीक की झोंपड़ी में एक रात रहना चाहता था इसलिए उसकी ओर एक रुपया बढ़या।

(ङ) सरदार ने वनरक्षक को बताया कि वह बहुत देर से महाराज को ढूँढ़ रहा है। यह सुनकर वनरक्षक चकित रह गया।

(च) राजा ने पुंडरीक को एक हजार रुपये सालाना पुरस्कार जीवन भर के लिए दिया और महाराज ने कहा कि मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूँ।

8. (क) जंगल में बहुत-से हिंसक पशु रहते हैं।
(ख) आदमी को कभी घमंड नहीं करना चाहिए।
(ग) दोनों में मामूली सी बात पर कहा-सुनी हो गई।
(घ) रानी को अपनी सुंदरता पर बहुत अभिमान था।
(ङ) राजा वन में शिकार खेलने गया।
(च) विश्वास की डोर एक बार टूटी तो फिर नहीं जुड़ती।
(छ) सच बोलने वाले का सब जगह सम्मान मिलता है।

9.

	विशेषण	विशेष्य
(क)	रंग-बिरंगी	तितलियाँ
(ख)	सात मीटर	फीता
(ग)	चार किलो	आम
(घ)	पाँच मीटर	कपड़ा
(ङ)	पीली	साड़ी

10. (क) उजाला (ख) असम्मान
(ग) रुकना (घ) रंक
(ङ) दक्षिण/जवाब (च) पास
(छ) घटिया (ज) शत्रु

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

BOOK-8

पाठ-1 युवा-वर्ग

खंड-अ

1. (क) प्रस्तुत कविता युवा-वर्ग के विषय में है।
(ख) पं. मोहनलाल गौतम और महात्मा गांधी।
(ग) हमें अत्याचार के सामने झुकना नहीं चाहिए और दुश्मन को सबक सिखाना चाहिए।
(घ) हम अपने देश का बँटवारा नहीं होने देंगे।
(ङ) युवा-पीढ़ी को अत्याचार के समक्ष नहीं झुकना चाहिए।

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) iii

3. (क) भारत की आन, बान, शान के रखवालों,
देश की बागडोर को सँभालो।
मिलजुलकर कंधे-से-कंधा मिलाओ,
झुकना न कभी अत्याचार के सम्मुख,
दुश्मन को ऐसा सबक सिखाओ।

(ख) बाजुओं में दम रखते हैं,
हर एक समस्या का निवारण करेंगे
तमन्ना आगे बढ़ने की रखेंगे।
देश को न कभी हम बँटने देंगे
एक गांधी तो क्या
सौ-सौ गांधी बन कर दिखा देंगे।

4. (क) युवा-वर्ग देश की प्रगति के लिए देश को आगे बढ़ा सकता है और गौतम, गांधी जी का सपना साकार कर सकता है।

(ख) युवा-वर्ग अगर अभी से देश का कल्याण करेंगे तभी वे आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शक बन सकेंगे इसिलए वे देश के भाग्य निर्माता हैं।

(ग) युवकों को गांधी गौतम बनने के लिए उन्हें भारी जिम्मेदारी उठानी होगी। उन्हें नई क्रांति लानी होगी और हर क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा।

(घ) हिम्मत रखकर हर मुश्किल का निवारण करना।

(ङ) युवा-पीढ़ी को कहा गया है।

(च) युवकों को हर समस्या का निवारण करने में आगे बढ़ना है।

(छ) देश को शिखर पर पहुँचाने की बात कही गई है।

(ज) वह आगे बढ़ने की तमन्ना रखता है।

5. (क) मुल्क, वतन; (ख) शत्रु, रिपु; (ग) अरमान, इच्छा; (घ) जननी, माता

6. कल, पीछे, हल्का, पुराना, गलत, उठना

7. सैनिक, रासायनिक, साप्ताहिक, ऐतिहासिक, पाक्षिक, सामाजिक, वार्षिक, दैनिक, मासिक

8. (क) हम आ गए हैं।

(ख) वह खेल रहा है।

(ग) इन्होंने पाठ पढ़ लिया।

(घ) आप हमारे घर कब आएँगे?

(ङ) आपलोग हमें पढ़ाइए।

9. प्रगति, जिम्मेदारी, हासिल, पीढ़ियों, सम्मुख, झुकने, बँटने, सँभालो, अत्याचार

खंड (ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 तीर्थयात्रा

खंड-अ

1. (क) लाजवंती को हेमराज की चिंता रहती थी।

(ख) हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था।

(ग) सच्चा सुख त्याग में ही है।

(घ) उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंट कर दी।

2. (क) i, (ख) ii, (ग) i, (घ) iii

3. (क) हेमराज; (ख) लाजवंती; (ग) दुर्गादास वैद्य; (घ) अठन्नी, वैद्य; (ङ) रामलाल; (च) तीन महीने बाद; (छ) हृदय; (ज) त्याग

4.

लाजवंती	दूध दुह रही थी।
उन्होंने	पैसे ले लिए।
आशा के साथ	निराशा भी थी।
आज की रात	बड़ी भयानक है।
तीर्थयात्रा की	तैयारी करो।
सच्चा सुख	त्याग में ही है।

5. (क) ✓; (ख) ✗; (ग) ✓; (घ) ✓; (ङ) ✗; (च) ✗;

6. (क) लाजवंती ने वैद्य से; (ख) वैद्य ने लाजवंती से; (ग) वैद्य ने लाजवंती से; (घ) वैद्य ने लाजवंती से; (ङ) हरो ने लाजवंती से; (च) हरो ने लाजवंती से

7. (क) लाजवंती के यहाँ कई पुत्र पैदा हुए मगर सबके सब बचपन में ही मर गए। आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था। उसका मुँह देखकर वह पहले बच्चों की मौत का दुख भूल जाती थी। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था।

(ख) हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुक कर बोला—''सिर में दर्द हो रहा है..... बहुत दर्द हो रहा है।''
बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। इसलिए उसने घबराकर वैद्य जी को बुलाया।

(ग) क्योंकि बुखार सख्त था और हानिकारक भी हो सकता था।

(घ) जब वैद्य जी ने नाड़ी देखी तो घबराकर बोले—''आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना, बुखार एकाएक उतरेगा।'' लाजवंती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। लाजवंती के हृदय को चैन न था। इसलिए वह मंदिर पहुँची और देवी के सामने गिरकर देर तक रोती रही। और काँपते हुए स्वर में मन्नत माँगी—''देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थयात्रा करूँगी।''

(ङ) हरो की चिंता का कारण था कि जेठ ने दो सौ रुपये के गहने कपड़े बन वा दिए मगर मिठाई आदि का कोई प्रबंध नहीं किया और अब मैं बारात के सामने क्या धरूँगी। कहीं इस वजह से मेरी बहन कुँवारी न रह जाए।

(च) हाँ, क्योंकि सच्चा सुख त्याग में ही है।

8. (क) रीता की आँखों से आँसू टपक रहे थे।

(ख) रमेश बहुत अनुभवी है।

(ग) नेहा बहुत प्रसन्न हुई।

(घ) राम ने तीर्थयात्रा की।

(ङ) गगन का हृदय काँप उठा।

9. (क) निराशापूर्ण वातावरण—गीता की आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

(ख) चेहरा मुरझा जाना—रमेश के अंक देखकर माता-पिता का चेहरा उतर गया।

(ग) बहुत प्रिय होना—अंकित अपनी माँ का गले का हार है।

(घ) भरसक प्रयास करना—राम ने परीक्षा में प्रथम आने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।

(ङ) धोखा देना—मीरा ने निशा को चकमा दिया।

10. लाभदायक, आशा, कृतघ्न, धीर, असफल, अंदर, असाधारण, बुरा, दिन

11. धावा, सचेत, मौसम, अवधि, बेटा, उर, बेचैन, चिकित्सक, बेखबर

12. झोंके, आँखें, बालकों, स्त्रियाँ, पुत्रों, पैरों, हथेलियाँ, मंदिरों, मालाएँ

13. (क) यह पुस्तक मैं पढ़ रहा हूँ।

(ख) सभी देशों से राजकुमार आए थे।

(ग) कल हमारे विद्यालय में मंत्रीगण आ रहे हैं।

(घ) रावण बहुत दुर्जन राक्षस था।

(ङ) रीता गुनगुने पानी से नहाती है।

(च) निराला बहुत प्रसिद्ध कवि थे।

खंड-(ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 सात सहेलियाँ

खण्ड-अ

1. (क) भारत के पूर्व में एक ही क्षेत्र में सात प्रदेश हैं।

(ख) अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा।

(ग) हिमालय की श्रृंखला कश्मीर से पूर्व तक लगभग 1500 मील लंबी है।

2. (क) iii, (ख) iii

3.

पहाड़ों में दूरी के कारण	लकड़ी के खंभों पर बनते हैं।
अधिक वर्षा के कारण	पूरा प्रदेश खुशियाँ मनाता है।
लकड़ी और बाँस	उनकी भाषा, पोशाक विशिष्ट हो जाता है।
पहाड़ पर मकान	यहाँ के जीवन का मूल आधार है।
बिहू त्योहार के अवसर पर	पहाड़ों पर वनों का विकास हो जाता है।

4. (क) भारत के पूर्व में एक ही क्षेत्र में सात प्रदेश हैं। इन प्रदेशों को अंग्रेजी में 'सेवन सिस्टर्स' कहा जाता है। हम इन्हें हिंदी में सात सहेलियाँ कह सकते हैं।

(ख) ये सारे प्रदेश पहाड़ी हैं। आप जानते हैं कि हिमालय की श्रृंखला कश्मीर से पूर्व तक लगभग 1500 मील लंबी है। हिमालय के पूर्वी छोर में ये सारे प्रदेश में स्थित हैं। पहाड़ों में मैदान की तरह घर कतार में नहीं बने होते। दो पहाड़ों के बीच जो छोटी-सी घाटी है, उसी में आबादी बसती है। इस कारण एक घाटी से दूसरी घाटी तक पहुँचना अत्यंत कठिन काम होता है। अत: हर घाटी के लोग दूसरी घाटियों से कटे होते हैं। इस दूरी के कारण उनकी भाषा, उनकी पोशाक, उनका रहन-सहन सब विशिष्ट हो जाता है।

(ग) संयोग की बात है कि चाय की खेती के लिए पहाड़ सबसे उत्तम हैं। उसे नियमित रूप से पानी चाहिए, लेकिन उसकी जड़ों में कभी पानी जमा नहीं होना चाहिए। इसलिए पहाड़ की ढलान में ही चाय के लिए सीढ़ियों की तरह चारों ओर क्यारियाँ बनाई जाती हैं।

5. असामान्य, बड़ी, ज्यादा, पुराना, अनर्थ, अनेक

6. विशेषताएँ, संस्कृति, भाषाएँ, जनजातियाँ, व्यवस्थाएँ, शैलियाँ, संभावनाओं, खुशियाँ, उपलब्धियाँ

7. (क) जाने की आवश्यकता होती है।

(ख) खेत में सिंचाई करने से फसल अच्छी होती है।

(ग) दर्द के कारण लिखा नहीं जा रहा है।

(घ) यहाँ गाड़ी नहीं चल पा रही है।

खंड-(ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 नन्हा-सा वीर

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) iii, (घ) i

3. (क) खाया, इधर-उधर, (ख) भाई, पॉलिश, (ग) चतुर, संसार, (घ) दौड़ना, हिलाकर, (ङ) स्वाभिमान, लालसा

4.

रतनगढ़	स्टेशन
दर्शन	बालाजी
पॉलिश	जूते
छोटा लड़का	स्वाभिमानी
बाबू जी	लेखक

5. (क) लड़के ने लेखक से कहा

(ख) लेखक ने लड़के से कहा

(ग) लेखक ने अपने मन में कहा

6. (क) दर्शन के लिए लेखक के साथ उसकी माँ, छोटी बहन और छोटा भाई भी था।

(ख) बस अड्डा ज्यादा दूर नहीं था इसलिए सब पैदल ही चल पड़े।

(ग) लेखक का परिवार रतनगढ़ होते हुए इसलिए जा रहा था क्योंकि सालासर के लिए दिल्ली से सीधी रेल न मिल पायी थी अत: उनको रतनगढ़ होते हुए जाना पड़ा।

(घ) लड़के ने लेखक से कहा कि अगर जूते पॉलिश करवा लोगे तो जो पैसे मिलेंगे उनसे मैं अपनी माँ को कुछ खाना खिला दूँगा यह सुनकर लेखक का दिल पसीज गया।

(ङ) लड़का स्टेशन से थोड़ी दूर झोंपड़ी में रहता था। उसकी माँ बर्तन माँजती थी।

(च) लड़के ने बताया कि उसके पिता नहीं है।

(छ) दूसरी बार जूते पॉलिश करते समय लड़का इसलिए चुप रहा क्योंकि उसने लेखक के हाथ में सौ रुपये का नोट देख लिया था और वह समझ गया था कि वह उसे देना चाहता है।

(ज) लड़के की माँ का इलाज सरकारी डिस्पेंसरी से चल रहा था।

(झ) लड़के की पेटी बैंच के समीप रखी थी। लेखक को देखते ही लड़का उछल पड़ा।

(ञ) लड़के के चेहरे के बारे में लेखक ने बताया कि लड़का कितना तेज था, उस चेहरे में कितना स्वाभिमान था, कितनी आत्म-निर्भर रहने की लालसा थी। सचमुच वह एक नन्हा-सा वीर था।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 खितीन बाबू

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) i, (ग) i, (घ) ii

3. (क) आस्तीन , जोड़, (ख) हँसमुख, प्रशंसा, (ग) अवयव, शक्ति, (घ) बैठे, कौन-सा व्यंजन, (ङ) शौकीन, आचार्य

4.

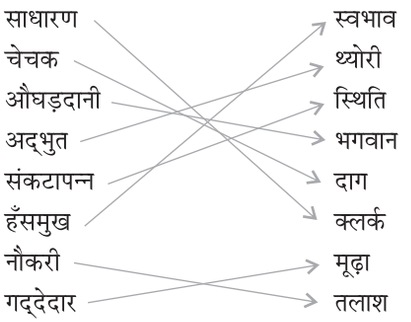

5. (क) खितीन बाबू ने लेखक से कहा
(ख) लेखक ने गृहपत्नी से पूछा
(ग) गृहपत्नी ने लेखक से कहा
(घ) मित्र पत्नी ने खितीन बाबू से कहा
(ङ) खितीन बाबू ने लेखक से कहा

6. (क) खितीन बाबू का चेहरा न सुंदर था न असाधारण न वह बड़े आदमी ही थे, साधारण पढ़े-लिखे, साधारण क्लर्क। चेचक के दाग से भरे-चेहरे पर आँख गायब थी।
(ख) खितीन बाबू की बाँह पेड़ से गिरने पर टूट गई थी।
(ग) लेखक इसलिए झिझक गया क्योंकि किसी की असमर्थता की ओर इशारा भी उसे असमंजस में डाल देता है।
(घ) स्वयं कीजिए।
(ङ) लेखक खितीन बाबू से तीसरी बार मिले तो उन्होंने देखा कि वो दूसरी बाँह भी खो चुके थे।
(च) लेखक ने गृहपत्नी से पूछा कि वह क्या बना रही हैं। गृहपत्नी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर दिया कि मैं क्या बना रही हूँ बना तो खितीन दा रहे हैं।
(छ) मानव-जीवन की मौलिक प्रतिज्ञा केवल मानव का अदम्य अटूट संकल्प है।

7. स्वयं कीजिए।
8. स्वयं कीजिए।
9. स्वयं कीजिए।

खंड-(ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 सोर्सराम के करतब

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) i

3.

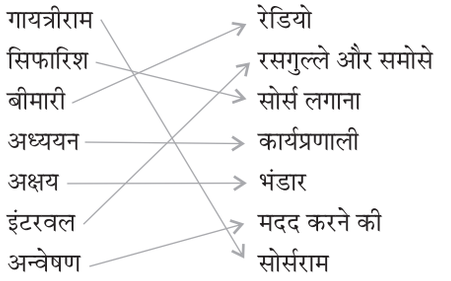

4. (क) ढूँढ़, मुश्किल, (ख) मदद, बीमारी, (ग) जबान, सुनाकर, (घ) अध्ययन, (ङ) लड़का, (च) इंटरवल, रेडियो, (छ) आदमियों, गप्प, (ज) रिजर्वेशन, सोर्सराम

5. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✗, (च) ✓, (छ) ✓

6. (क) सोर्सराम जी को हर किसी की मदद करने की बीमारी है। वे आपके किसी भी काम के लिए सोर्स भिड़ाने लग जाएँगे। इसलिए वे सोर्सराम जी के नाम से विख्यात हैं।
(ख) शहर के किसी कोने में अगर कोई महाशय धोती-कुरता पहने पान की पीक से होंठ लाल किए, आँखों में सुरमा लगाए, दोस्ती बढ़ाने के चक्कर में लगे मिल जाए तो समझिए कि वे ही हैं हमारे सोर्सराम जी।
(ग) सोर्सराम जी को हर किसी की मदद करने की बीमारी थी।
(घ) सोर्सराम जी का सोर्सों का भंडार घटने न पाए इसके लिए वे रात-दिन प्रयत्नशील रहते थे राह चलतों से दोस्ती बढ़ाना उनकी हॉबी थी।
(ङ) लेखक ने सोर्सराम जी की कार्यप्रणाली का अध्ययन निकट से किया है।
(च) छक्कन का लड़का रेडियो ठीक करने का काम करता है।
(छ) लेखक लाइन छोड़कर चोर दरवाजे से भीतर चला गया। वहाँ उसे अपना आदमी मिला और उस आदमी के साथ वह टिकट बाबू तक पहुँचा।
(ज) सोर्सराम जी टिकट बाबू को ज्यों की हाल-चाल बताने लगते वह अपनी लाइन निबटाने में लग जाता यह सिलसिला काफी देर तक चला।
(झ) लेखक मन मसोसकर इसलिए बैठ गया क्योंकि टिकट बाबू ने गप्पें मारने के लिए उनसे इंतजार करने के लिए कहा था।
(ञ) इस कहानी के द्वारा लेखक ने हमें यह समझाने का प्रयास किया है कि जबरदस्ती दूसरों से मेल-जोल बढ़ाने के लिए उनका समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।
9. स्वयं कीजिए।

खंड-(ब)

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 परिंदे की फ़रियाद

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) iii, (घ) i

3. (क) आजादी सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में संभव है— सकारात्मक आजादी में हम कहीं भी आ-जा सकते हैं मन के मुताबिक कार्य कर सकते हैं।
नकारात्मक आजादी में हम विचारों के स्वतंत्र हैं, किंतु अपनी इच्छा से घूम-फिर नहीं सकते हैं।

4. स्वयं कीजिए

5. पिंजरे में बंद पक्षी की पुकार को अनसुना कर देना चाहिए।

6. (क) कैदी को अपना गुजरा जमाना याद आ रहा है, उसको बाग की बहारें और सबका चहचहाना याद आता है। उसकी आजादी से अपने घोंसले में आना-जाना याद आता है।
(ख) कैदी को डर है कि कहीं वो अपने पिंजरे में गम के कारण मर न जाए।
(ग) प्रस्तुत कविता में तोता अपनी फरियाद सबको सुनाता है और पिंजरें में कैद होने का गम सुनाता है। इसलिए यह शीर्षक एकदम उचित है।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए। **10.** स्वयं कीजिए।

11. स्वयं कीजिए। **12.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 जामुन का पेड़

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii, (घ) ii

3. (क) मिनटों, इकट्ठी, (ख) बच्चे, (ग) हार्टिकल्चर, व्यंग्यपूर्ण, (घ) प्लास्टिक, (ङ) स्वास्थ्य

4.

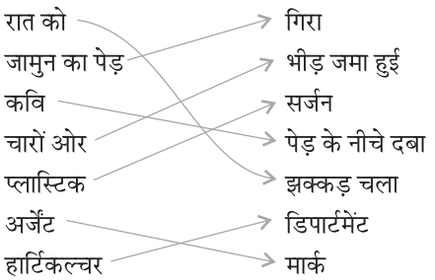

5. (क) एक क्लर्क ने कहा

(ख) माली ने कहा

(ग) दबा हुआ आदमी बोला

(घ) सुपरिटेंडेंट बोला

(ङ) माली ने दबे हुए आदमी से पूछा

6. (क) पेड़ के नीचे दबे आदमी को देखकर माली दौड़कर चपरासी के पास गया मिनटों में गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।

(ख) जामुन के पेड़ को गिरा देख पहले क्लर्क ने कहा कि बेचारा जामुन का पेड़ कितना फलदार था।

(ग) तीसरे क्लर्क ने रुआँसा होकर कहा कि मैं इसके फल झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुन कितनी खुशी से खाते थे।

(घ) पेड़ के नीचे दबे आदमी का उपनाम 'ओस' था। वह एक कवि था।

(ङ) हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट से यह जवाब आया कि आश्चर्य है, हम लोग पेड़ लगाओ स्कीम चला रहे हैं और हमारे देश के अफसर पेड़ का काटने का सुझाव दे रहे हैं। वह भी फलदार जामुन के पेड़ को।

7. स्वयं कीजिए।

8. स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 बस की यात्रा

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) ii, (ग) iii, (घ) ii

3. (क) भीड़, (ख) विश्वसनीय, (ग) सीट, इंजन, (घ) ड्राइवर, (ङ) मंजिल

4. स्वयं कीजिए।

5. (क) लेखक के मन में बस-कंपनी के हिस्सेदार के लिए श्रद्धा इसलिए जागी, क्योंकि बस वृद्ध थी सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी वह बस पूजा के योग्य थी उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता था।

(ख) लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते क्योंकि बस डाकिन है।

(ग) लोग बस में सफर इसलिए नहीं करना चाहते थे क्योंकि बस बहुत पुरानी थी और उसकी स्थिति अच्छी नहीं थी।

(घ) एकाएक बस इसलिए रुक गई, क्योंकि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा।

(ङ) बस की रफ्तार पंद्रह-बीस मील हो गई थी।

(च) लेखक पेड़ों को दुश्मन इसलिए समझ रहा था, क्योंकि जो भी पेड़ आता उसको डर लगता कि इससे बस टकराएगी।

6. (क) राम हमारी कंपनी में काम करता है।

(ख) हमें अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए।

(ग) हमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए।

(घ) स्कूटर स्टार्ट करने की कोशिश करो।

(ङ) गांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाया।

7. (क) जबलपुर, (ख) ट्रेनिंग, (ग) कष्ट, (घ) आंदोलन, (ङ) डॉक्टर, (च) क्रांतिकारी

8. (क) समझदार, (ख) शानदार, (ग) मज़ेदार, (घ) दुकानदार, (ङ) थानेदार, (च) देनदार

9. (क) शाम, (ख) शत्रु, (ग) सहयोग, (घ) दोस्त, (ङ) सुलभ

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 योग्यता की पहचान

खंड-अ

2. (क) i, (ख) ii, (ग) ii

3. (क) औषधियों, (ख) अवस्था, असमर्थ, (ग) चयन, सहायक, (घ) नागार्जुन, (ङ) नवयुवक, खामोश

4.

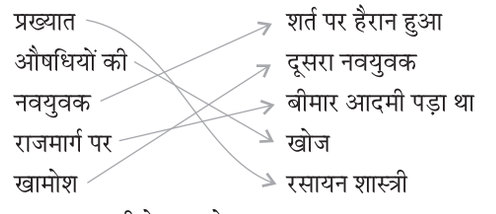

5. (क) रसायन शास्त्री ने राजा से कहा

(ख) राजा ने रसायन शास्त्री से कहा

(ग) पहले नवयुवक ने रसायन शास्त्री से कहा

(घ) रसायन शास्त्री ने दोनों नवयुवकों से कहा

(ङ) रसायन शास्त्री ने दूसरे नवयुवक से कहा

6. (क) नागार्जुन अपने जमाने के प्रख्यात रसायन शास्त्री थे उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से अनेक असाध्य रोगों की औषधियाँ तैयार कीं।

(ख) नागार्जुन ने राजा से कहा कि राजन प्रयोगशाला का काम बहुत बढ़ चला है और अपनी अवस्था को देखते हुए मैं अधिक काम करने में असमर्थ हूँ। इसलिए मुझे अपने काम के लिए एक सहायक की आवश्यकता है।

(ग) राजा ने कहा कि वह उनके पास दो कुशल और योग्य नवयुवक भेज़ेंगे। उनमें से किसी एक का चयन अपने सहायक के रूप में कर लेना।

(घ) जब नागार्जुन ने कहा कि रसायन तैयार करने के लिए राजमार्ग से होकर जाना है। तो दोनों युवक हैरत में पड़ गए।

(ङ) नागार्जुन ने पहले युवक से पूछा कि क्या उसने रसायन तैयार कर लिया। युवक ने उत्तर दिया कि मैंने उस पदार्थ की पहचान करके रसायन तैयार कर लिया।

(च) दूसरे युवक ने उत्तर दिया कि जब मैं राजमार्ग से होकर गुजर रहा था तो मैंने देखा कि एक वृद्ध बीमार व्यक्ति पड़ा दर्द से कराह रहा था सब अपने रास्ते जा रहे थे। मुझसे उसकी यह दुदर्शा देखी नहीं गई, मैंने उसे अपने घर ले जाकर उसकी सेवा-चिकित्सा की इसलिए मैं रसायन तैयार नहीं कर पाया।

7. स्वयं कीजिए।

8. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 समय का महत्त्व

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) ii, (घ) iii

3. (क) पलभर, बदल, (ख) तैयार, आलस, (ग) निरुत्तर, (घ) सुविधा, आवश्यकता, (ङ) संदेश

4.

उपजाऊ	पढ़ाई
परलय	मिट्टी
परीक्षा	उपचार
प्राथमिक	बहुरि
सुविधा	परिक्रमा
पृथ्वी	व्यवस्था

5. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓, (च) ✓, (छ) ✗, (ज) ✓

6. (क) किसान को लाभ इसलिए नहीं हुआ क्योंकि उसने सही वक्त पर फसल नहीं काटी और पक्षियों ने फसल को खराब कर दिया।

(ख) कबीरदास का दोहा—

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब?"

(ग) आलसी व्यक्ति साधारण प्रश्न करने से ही निरुत्तर रह जाएँगे।

(घ) हम घर में दवा इसलिए रखते हैं ताकि किसी अचानक आने वाली परिस्थिति में प्राथमिक उपचार हो सके।

(ङ) हर समझदार व्यक्ति अपनी सुविधा और आवश्यकता की व्यवस्था समय रहते ही करता है।

(च) समय के साथ चलने के लिए अनुशासित होना सबसे जरूरी है। प्रकृति अनुशासन का सर्वोत्तम उदाहरण है, सूरज नियमित रूप से उदय और अस्त होता है। पृथ्वी अपनी निश्चित धुरी पर निश्चित गति में घूमती है। चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा निश्चित अवधि में पूरी करता है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा निश्चित अवधि यानि 365 दिन में करती है। मौसम का निश्चित समय होता है। ज्वार-भाटा निश्चित अवधि में आते हैं। प्रकाश की किरणें निश्चित गति से चलती हैं। ध्वनि की रफ्तार भी निश्चित है।

(छ) टालू मास्टर हर काम को टालने में माहिर थे। टालू मास्टर को अपनी टालने की प्रवृत्ति के कारण पदोन्ति का अवसर खोना पड़ा और उनके पास पछताने के अतिरिक्त कोई और चारा न बचा था।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 सच्चा यज्ञ

खंड-अ

2. (क) i, (ख) iii, (ग) i, (घ) ii, (ङ) iii

3. (क) धर्मपरायण, (ख) सेठ, यज्ञ, (ग) देह, कूदने, (घ) बस्ती, (ङ) विश्राम, रास्ता, (च) निस्वार्थ, महायज्ञ

4.

धन्ना सेठ	दैवी शक्ति प्राप्त
पोटली	कुत्ता
दुर्बल	मोटी-मोटी रोटियाँ
सेठानी	दान और यज्ञ

5. (क) सेठानी ने सेठ से कहा

(ख) धन्ना सेठ ने सेठ से कहा

(ग) सेठ ने सेठानी से कहा

(घ) सेठानी ने सेठ से कहा

6. (क) उन दिनों (सेठ जी के समय) यज्ञ बेचने की प्रथा प्रचलित थी।

(ख) एक यज्ञ बेचने की बात सुनकर सेठ जी को बहुत दु:ख हुआ।

(ग) कुंदनपुर की सेठानी के विषय में यह अफवाह फैली थी कि उसको कोई दैवी शक्ति प्राप्त है।

(घ) वृक्षों का कुंज और कुआँ देखकर सेठजी ने थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम करने का विचार किया।

(ङ) कुत्ता भूख से छटपटा रहा था सेठजी ने कुत्ते को अपनी सारी रोटियाँ खिला दीं।

(च) भूखे कुत्ते को रोटी खिलाकर सेठजी ने महायज्ञ किया और सेठानी ने बताया कि स्वयं न खाकर सारी रोटियाँ कुत्ते को खिलाकर सेठजी ने महायज्ञ किया है क्योंकि नि:स्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ-महायज्ञ है।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 गाते हो तरु

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) i

3. (क) चिर सुगंध तरु, गाते हो, कितना जाग्रत गाना!
जड़ कंधों पर चिड़ियाँ चहकीं, डालों गंध-भरी महकीं
फल रस भरे फूल मनमोहें, झूमे हैं कुछ बहकीं-बहकीं,
सब कुछ खोते हो, खरीदते हो कितना 'पाना'?
चिर सुगंध तरु, गाते हो, कितना जाग्रत गाना!

(ख) नीचे कीच, शीश पर बंदर, विषधर घूम रहे डालों पर
फूलों पर भौंरों की भन-भन, उड़न डिठौने-सी गालों पर,
फिर भी शीतल रहने का तरु भेद बताना!
चिर सुगंध तरु, गाते हो, कितना जाग्रत गाना!

4. (क) पेड़-पौधे शांत होते रहते हैं किंतु हवा के चलते ही लहराने लगते हैं उनके हिलते हुए पत्ते ऐसे लगते हैं, मानो उनकी जीभ खुली है वे बोल रहे हैं।
सदैव चुप रहते हुए भी ऐसा आभास होता है कि वह अनेक प्रकार के मंत्रों का जाप कर रहे हैं।

(ख) पेड़ सदैव अपने अवयव सबको देता है उसके फल, पत्ते, लकड़ी सभी दूसरों के काम में आते हैं उसका अपने लिए कुछ भी नहीं है। पेड़ सदैव ऋतुओं की मार सहते हैं किंतु सदैव जागरुक गाना गाते रहते हैं।

5.

सह-सहकर	चहकीं
चिर सुगंध	ऋतुओं की मारें
चिड़ियाँ	रस भरे
फल	घूम रह डालों पर
विषधर	तरु

6. (क) कविता में गीत पेड़ गा रहे हैं।
(ख) कवि में सदैव जागरुक गाने की बात कही है।
(ग) कविता में साँप, चिड़ियाँ, बंदर का वर्णन हुआ है।
(घ) चिड़ियाँ पेड़ की डाल पर चहक रही हैं।
(ङ) चिर सुगंध तरु के जाग्रत गान गाने से ठंडी हवा चल पड़ती है पेड़ पत्तों के माध्यम अपनी जीभ खोलते हैं। स्वयं स्थिर हैं, किंतु जग में आने-जाने लेख लिखते हैं।
(च) पेड़ों के नीचे कीचड़ रहती है शीर्ष पर बंदर रहते हैं, पेड़ की डालों पर सर्प घूमते रहते हैं, फूलों पर भौंरें उड़ते हैं। कवि कहता है कि पेड़ फिर भी शीतलता का संदेश देते हैं।
(छ) इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि सभी प्रकार के सुख दुःख सहकर भी हमें पेड़ों की तरह सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।
9. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 पानी रे पानी

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) i, (घ) ii
3. (क) पानी, होने, (ख) शहरों में, चीजों, (ग) गुल्लक, (घ) गलती, सजा, (ङ) धरती, गुल्लक, (च) उपयोग, चक्कर

4.

बादल	सूखा
झगड़ा	बहुत अधिक वर्षा
बाढ़	बहुत बड़ी गुल्लक
पृथ्वी	समुद्र से उठी भाप
अकाल	आपस में तू-तू, मैं-मैं

5. (क) समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापस मिल जाती है। यह जल-चक्र कहलाता है।

(ख) अब पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है। नलों में पानी अब पूरे समय नहीं आता है। नल खोलो तो उससे सूँ-सूँ की आवाज आने लगती है। पानी आता है तो बेवक्त कभी देर रात तो कभी भोर सवेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो।

(ग) रोज-रोज के इन झगड़ों-टंटों से बचने के लिए कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है।

(घ) पानी की कमी ने गाँव-शहरों को ही नहीं, बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बंगलुरु जैसे शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल दिया है।

(ङ) हमारी धरती को लेखक ने एक गुल्लक की तरह बताया है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए।

(च) मनुष्य ने जमीन के लालच में तालाबों को कचरे से पाटकर (भरकर) समतल बना दिया है। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाजार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

(छ) हमारी गलती की हम सबको सजा मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं।

6. स्वयं कीजिए। **7.** स्वयं कीजिए।
8. स्वयं कीजिए। **9.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 बस्तों की फरियाद

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) i, (घ) ii, (ङ) i
3. (क) प्रतिनिधि, इजाजत, (ख) बेल्टों, (ग) पार, (घ) पढ़ाई, सुविधा, (ङ) प्रांगण, (च) कॉपियों, (छ) चावल, अंदाजा
4. (क) बस्तों ने कहा
(ख) महामंत्री ने महाराज से कहा
(ग) महाराज ने महामंत्री से कहा
(घ) बस्तों ने महाराज से कहा
(ङ) बच्चे ने महाराज से कहा
(च) बच्चे ने महाराज से कहा
(छ) महाराज ने बच्चे से कहा
(ज) महामंत्री ने महाराज से कहा
5. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓
6. (क) राजमहल को हजारों बस्तों ने इसलिए घेरा था क्योंकि वे महाराज से शिकायत करना चाहते थे।
(ख) दरबार में आने वाले बच्चे फर्स्ट, फोर्थ, सेवंथ, टेंथ, टुवेल्थ स्टैंर्ड के थे।
(ग) राजा ने मंत्री से कहा कि यह कार्य तो घर पर भी किया जा सकता है माता-पिता, दादा-दादी के संरक्षण में सीखेंगे तो, उन्हें स्नेह-दुलार भी मिलेगा और बच्चे कुछ अधिक ग्रहण करेंगे।
(घ) राजा ने बचपन प्ले स्कूल के बजाय घर पर इसलिए अच्छा बताया

क्योंकि इस तरह वे घर पर माता-पिता और दादा-दादी के साथ रहकर खेलेंगे भी और शिक्षा भी ग्रहण करेंगे।

(ङ) आजकल दादा-दादी बच्चों के साथ इसलिए नहीं रह पाते हैं क्योंकि ज्यादा धन कमाने की चाहत में आदमी गाँव-कस्बा छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहा है। बच्चों के दादा-दादी अपने गाँव-कस्बों के ही होकर रह गए हैं।

(च) शिक्षकों ने नन्हे बालक को हिदायत दी कि अगर बस्ते के वजन संबंधी कोई शिकायत की तो शाला से निष्कासित कर देंगे।

(छ) महामंत्री वजन तौलने की मशीन लाता है।

(ज) बस्ता भारी होने के कारण बच्चे की आँख में आँसू आ जाते हैं।

(झ) बच्चे का वजन तेरह किलो दो सौ ग्राम है।

(ञ) राजा ने बस्तों की समस्या का समाधान यह निकाला है कि कंप्यूटर का युग है बस्तों का चलन बंद किया जाएगा। शाला की कक्षा में और हर घर में कंप्यूटर होंगे। किताबे बंद, कॉपियाँ बंद। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 बात अठन्नी की

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) iii, (घ) ii

3. (क) अमीर, संदेह, (ख) मजिस्ट्रेट, पड़ोस, (ग) ठहरने, कोठरी, (घ) समझ, रिश्वत, (ङ) अपराधी, कोठियों

4.

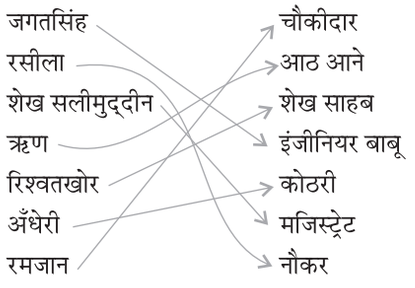

5. (क) जगतसिंह ने रसीला से कहा

(ख) रमजान ने रसीला से कहा

(ग) रसीला ने रमजान से कहा

(घ) रसीला ने इंजीनियर बाबू से कहा

(ङ) दासी ने रमजान से पूछा

6. (क) रसीला के गाँव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। वह सारी तनख्वाह घर भेज देता था।

(ख) तनख्वाह बढ़ाने की बात सुनकर इंजीनियर बाबू ने कहा कि अगर कोई तुम्हें ज्यादा दे तो अवश्य चले जाओ मैं तनख्वाह नहीं बढ़ाऊगा।

(ग) रमजान कोठरी के अंदर से कुछ रुपये लेकर आया और उसने रसीला के हाथ पर रख दिए।

(घ) रसीला ने इंजीनियर बाबू को यह कहते सुना कि बस पाँच सौ। इतनी-सी रकम देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

(ङ) इंजीनियर साहब ने रसीला से पाँच रुपये की मिठाई लाने को कहा और उसको पाँच रुपये दिए।

(च) रसीला ने साढ़े चार रुपये की मिठाई खरीदी और अठन्नी रमजान को देकर कर्ज उतारा।

(छ) रसीला चाहता तो कह सकता था कि यह साजिश है।

(ज) शेख साहब ने रसीला को छह महीने की सजा सुनाई।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

9. स्वयं कीजिए। **10.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 उपहार

खंड-अ

2. (क) iii, (ख) ii, (ग) ii, (घ) i

3. (क) उपहार, बेहद, (ख) रोजाना, सफाई, (ग) पिंजरे, खाना खाने, (घ) शेरोजा, (ङ) उपहार, मूल्यवान

4. (क) शेरोजा की माँ ने शेरोजा से कहा

(ख) शेरोजा ने अपनी माँ से कहा

(ग) शेरोजा ने स्वयं से कहा

(घ) शेरोजा की माँ ने शेरोजा से कहा

(ङ) शेरोजा की माँ ने शेरोजा से कहा

5. (क) उपहार, (ख) दाने, (ग) माँ, (घ) कम, (ङ) सोने

6. (क) शेरोजा का जन्मदिन था। सबसे बेहद अलग और अनोखा उपहार चिड़िया का पिंजरा था।

(ख) शेरोजा ने कहा कि मुझे चिड़िया की आवाज बहुत पसंद है वह मुझे मीठे सुरों में गाना सुनाएगी।

(ग) शेरोजा की उपस्थिति के कारण चिड़िया पिंजरे में नहीं आ रही थी।

(घ) शेरोजा पिंजरे को अंदर इसलिए लाया क्योंकि वह चिड़िया को देखकर बहुत खुश था।

(ङ) चिड़िया को हाथ में लेकर शेरोजा की माँ ने कहा जरा सावधान रहना। इसे परेशान मत करना। कितना अच्छा होता यदि तुम इसे आजाद कर देते।

7. स्वयं कीजिए। **8.** स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 वीर नहीं धीरज खोते

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) iii, (ग) iii

3. (क) है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़

(ख) गुण बड़े एक-से-एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर
मेंहदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो

4. (क) वीर पुरुष अपने उद्देश्य के मार्ग में आने वाली मुसीबतों का भी डटकर मुकाबला करते हैं और मुश्किल-से-मुश्किल मार्ग के बीच में भी अपनी राह बना लेते हैं।

(ख) मानव अगर कोशिश करें तो पत्थर से भी पानी की धार निकाल सकता है।

5.

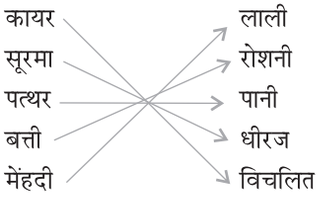

6. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓, (च) ✓

7. (क) प्रस्तुत कविता में लेखक का काँटों से तात्पर्य रास्ते में आने वाले विघन से है।

(ख) जब वीर और सूरमा व्यक्ति जोर लगाते हैं तो पर्वत के पाँव उखड़ जाते हैं।

(ग) पत्थर के पानी बनने से तात्पर्य है कि जब मानव हिम्मत से पत्थर पर वार करता है तो उसमें से भी पानी की धारा फूट पड़ती है।

(घ) वीर पुरुषों के सामने कोई भी बाधा टिक नहीं पाती है।

(ङ) मानव के अंदर अनेक गुण छिपे हैं जैसे मेंहदी के अंदर लाली छिपी होती है। दीए की बत्ती में उजाला छिपा होता है।

(च) दीया रात्रि में जलता है। दीया जलाने के लिए तेल और बत्ती की आवश्यकता होती है।

(छ) इस कविता के रचयिता 'रामधारी सिंह दिनकर' जी है।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 आदर्श वीरांगना : महारानी लक्ष्मीबाई

खंड-अ

2. (क) ii, (ख) i, (ग) iii, (घ) iii

3. (क) सेनानायक, कृपा, (ख) आनंद, निधन, (ग) असहनीय, घबराई, (घ) ह्यूरोज ने, (ङ) विजयोल्लास, विरुद्ध

4.

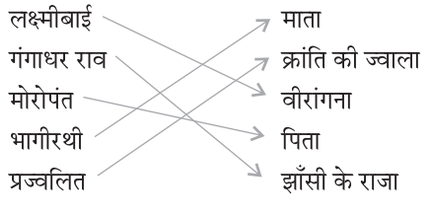

5. (क) काशी, (ख) पिता, (ग) कृपा, (घ) माना, (ङ) तात्या टोपे

6. (क) रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मणिकर्णिका था।

(ख) लक्ष्मीबाई का उपनाम मनुबाई था।

(ग) मनुबाई का विवाह गंगाधर राव से हुआ था। वे झाँसी के राजा थे।

(घ) सारी झाँसी शोक लहर में इसलिए डूब गई क्योंकि चार माह के पश्चात् ही मनु के पुत्र का निधन हो गया था।

(ङ) राजा गंगाधर ने अपने परिवार के बालक दामोदर राव को गोद लिया उसे अंग्रेजों ने उत्तराधिकारी मानने से इंकार किया।

(च) उत्तरी भारत के नबाव और राजे-महाराजे इसलिए असंतुष्ट हो गए क्योंकि अंग्रेजों की राज्य लिप्सा की नीति थी।

(छ) अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने में नबाव वाजिद अलीशाह की बेगम हजरत, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजीमुल्ला, शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दनसिंह और तात्या टोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग किया।

7. स्वयं कीजिए।

8. स्वयं कीजिए।

खंड-ब

स्वयं कीजिए।